चन्द्रप्रभा

(महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका)

वर्ष- प्रथम   अंक- प्रथम   सन् 2023

प्रधान संपादक

डा० कुमार मृत्युंजय राकेश

प्राचार्य

चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन

काँटी, मुजफ्फरपुर

प्रकाशक

चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन

काँटी, मुजफ्फरपुर, बिहार- 843109

Scanned with OKEN Scanner

मुख्य संरक्षक

श्री राजीव रंजन
सचिव एवं मैनेजिंग ट्रस्टी
चंद्रशील एजुकेशनल ट्रस्ट फाउंडेशन
काँटी, मुजफ्फरपुर

संरक्षक

श्री अमेय विक्रम
निदेशक
चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन
काँटी, मुजफ्फरपुर

प्रधान संपादक

डॉ० कुमार मृत्युंजय राकेश
प्राचार्य
चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन
काँटी, मुजफ्फरपुर

कार्यकारी संपादक

श्री अश्विनी कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष डी०एल०एड०
श्री ओम शंकर उपाध्याय
प्राध्यापक डी०एल०एड०

संपादक मंडल

डॉ० सनद कुमार दुबे, सहायक आचार्य बी०एड०
डॉ० प्रकाश चंद्रा, सहायक आचार्य बी०एड०
नीतू कुमारी, सहायक आचार्या बी०एड०
नितु कुमारी, सहायक आचार्या बी०एड०
श्री सुभाष कुमार, सहायक आचार्य बी०एड०
श्री अमित कुमार, प्राध्यापक डी०एल०एड०
श्रीमती शिवप्रिया, प्राध्यापक डी०एल०एड०

सर्वाधिकार सुरक्षित

चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन
चंद्रशील एजुकेशनल ट्रस्ट फाउंडेशन, काँटी, मुजफ्फरपुर– 843109
इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रस्तुत विचार लेखकों के निजी विचार हैं इसके लिए प्रकाशक एवं संपादक मंडल किसी भी प्रकार उत्तरदाई नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner

सम्पादकीय

भावाभिव्यक्ति मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है जिसे वह आदिम अवस्था से ही साथ लाया है। वस्तुतः अभिव्यक्तियाँ लिखित और मौखिक दो प्रकार से व्यक्त की जाती हैं। कभी–कभी यह देखा जाता है कि अनपढ़ लोगों द्वारा भी भावों का आवेग कवित्वमय रूप में प्रकट होता है। कबीरदास जैसे मनीषियों का भावात्मक चिंतन ऐसा ही रहा है। तरुणाई में भाव के ऊर्जस्वित स्वरूप संगुम्फित होकर विभिन्न ह्रदयों में इस प्रकार आलोड़न–विलोड़न करते रहते हैं, मानो वे निःसृत होने के लिए छटपटा रहे हों। उन्हीं भावों का मूर्त रूप होती हैं–शैक्षणिक संस्थाओं से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएं, इनके माध्यम से बहुत से युवा ह्रदयों के भावात्मक मकरंद की सुवास तो चतुर्दिक फैलती ही है, साथ ही महाविद्यालयीय गतिविधियों का दस्तावेज भी प्रस्तुत हो जाता है। उसी क्रम में 'चंद्रप्रभा' का प्रकाशित होना महायज्ञ के समान प्रतीत होता है।

मेरी आकांक्षा है कि जिस प्रकार शरद पूर्णिमा के चंद्र की प्रभा अपने प्रभाव से विश्व को अमृत युक्त बनाती है उसी प्रकार महाविद्यालय से प्रकाशित यह 'चंद्रप्रभा' सुधी विद्वानों के चिंतनपरक लेखों एवं प्रशिक्षुओं के भाव रूपी अमृत तत्व से समाज सुवासित हो तथा राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करे। यही मेरी श्रम सार्थकता तथा सफलता होगी।

भारतीय संस्कृति में कृतज्ञता ज्ञापन करने के संस्कार को विस्मृत नहीं किया जा सकता। अतः सर्वप्रथम मैं महाविद्यालय के सचिव माननीय राजीव रंजन द्विवेदी, निदेशक आदरणीय अमेय विक्रम द्विवेदी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके कर्म एवं आशीर्वाद से महाविद्यालय का अस्तित्व समाज तथा राष्ट्र में है। तत्पश्चात मैं सर्वजन स्नेह भाव से अनुप्राणित महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य डॉ. कुमार मृत्युंजय राकेश के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने मुझ जैसे अल्पज्ञ को इस योग्य समझा कि मैं पत्रिका संपादन के दायित्व का निर्वहन कर सकूँगा।

सौम्यता और शालीनता से ओतप्रोत विभागाध्यक्ष आदरणीय अश्विनी कुमार मिश्र, प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष सहयोग हेतु मैं संपादक मंडल के सदस्यों एवं विद्वान शिक्षकों तथा विदुषी शिक्षिकाओं को साधुवाद देता हूँ। साथ ही सुधी पाठक आलोचकों से यह विनम्र निवेदन करता हूं कि इस पत्रिका की कमियों को सादर सुधारात्मक रूप में बताने की कृपा करें। इन्ही विचारों के साथ मैं यह 'चंद्रप्रभा' पत्रिका रूपी पुष्प वीणा वादिनी माँ सरस्वती की चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

अंततः महाकवि 'प्रसाद' की अधोलिखित पंक्तियों के साथ लेखनी विराम लेती है–

"बनो संसृति के मूल रहस्य,
तुम्हीं से फैलेगी वह बेल।
विश्व भर सौरभ से भर जाय,
सुमन के खेलो सुंदर खेल।।"

शरद पूर्णिमा, आश्विनी शुक्ल
विक्रम संवत् २०७६, युगाब्द ५१२४,
तद्नुसार ख्रिष्टाब्द 9 अक्टूबर 2022 ।

आपका बन्धु
ओम शंकर उपाध्याय

Scanned with OKEN Scanner

हमारे प्रेरणा श्रोत

स्व० शीला द्विवेदी

स्व० चन्द्रशेखर द्विवेदी

श्रीमती सुनीता द्विवेदी
ट्रस्टी चन्द्रशील एजुकेशनल
ट्रस्ट फाउन्डेशन

मुख्य संरक्षक

श्री राजीव रंजन
सचिव एवं मैनेजिंग ट्रस्टी
चंद्रशील एजुकेशनल ट्रस्ट फाउंडेशन,
काँटी, मुजफ्फरपुर

संरक्षक

श्री अमेय विक्रम
निदेशक
चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन
काँटी, मुजफ्फरपुर

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षक गण

श्री कुमार मृत्युंजय राकेश
प्राचार्य

डॉ रश्मि बाला
सहायक आचार्य

श्रीमती नितू कुमारी
सहायक आचार्य

डॉ सनद कुमार दुबे
सहायक आचार्य

डॉ प्रकाश चंद्रा
सहायक आचार्य

श्रीमती नितू कुमारी
सहायक आचार्य

श्री प्रहलाद सिंह यादव
सहायक आचार्य

श्री आलोक कुमार
सहायक आचार्य

श्री पप्पु कुमार
सहायक आचार्य

श्री सुभाष कुमार
सहायक आचार्य

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षक गण

श्री ओम प्रकाश यादव

डॉ शिव प्रिया

श्री सुशील कुमार मिश्रा

श्री सोनु कुमार

श्री रंजन कुमार

डॉ मो० फिरोज

डॉ जय प्रकाश कुमार मिश्रा

श्री शशि रंजन पं० देव

श्रीमती खुशबु कुमारी

श्रीमती प्रभावती कुमारी

श्री प्रभात कुमार सिंह

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षक गण

श्री दिलीप कुमार
आई०टी० विशेषज्ञ

श्री विकाश कुमार
एकाउन्टेन्ट

श्री अंशुमणी
कार्यालय प्रभारी

श्री राहुल कुमार
पुस्तकालयाध्यक्ष

श्री सोनु कुमार
प्रयोगशाला सहायक

श्री संजय कुमार
सुपरवाइजर

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

विषय–वस्तु प्रष्ठ संख्या

1. प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर भाषा शिक्षण
2. बदलते परिवेश में मातृभाषा के प्रति अरुचि
3. तू जिंदगी को जी
4. कामयाबी
5. बालक में "सृजनात्मकता एवं समायोजनशीलता" का विकास
6. माध्यमिक सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में छात्रों की शिक्षा व्यवस्था का तुलनात्मक शैक्षिक अध्ययन :
7. मानव जीवन के लिए 'कला बोध'
8. एक और एग्जाम : विद्यार्थी जीवन
9. असम की प्रतिभाशाली "चंद्रप्रभा सैकियानी" का शैक्षिक आन्दोलन
10. शिक्षक–शिक्षा एक आदर्श चरित्र बनाने की पहल
11. भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का संक्षिप्त जीवन परिचय।
12. गणित का अन्य विषयों के साथ सहसंबंध।
13. मौलिकता की पहचान है हमारी लोक संस्कृति (मुजफ्फरपुर जिले के संदर्भ में)
14. क्या रखा है?
15. चन्द्रशील
16. **BARRIERS**
17. गुरु से शिष्य और शिष्य से गुरु की पहचान
18. हमारे गुरू
19. कोशिश कर
20. माता–पिता
21. विलासितापूर्ण जीवन और खुशी
22. कौन है?
23. जिन्दगी
24. स्त्री की सहनशीलता
25. मेरे पापा
26. अच्छा इन्सान
27. स्त्री के विविध रूप
28. बेटा, बेटी एक समान
29. माँ
30. एक आम लड़की के बिखरते सपने
31. जिन्दगी

Scanned with OKEN Scanner

विषय–वस्तु प्रष्ठ संख्या

32. पुनर्जन्म

33. बेटियाँ और उसका मन

34. छठ–पूजा

35. जीवन का संघर्ष

36. शिक्षक का जीवन

37. इन्तजार

37. मिट्‌टी के बने हमलोग, फिर मिट्‌टी के हो जायेंगे

38. माँ

39. जिन्दगी का रहस्य

40. लक्ष्य

41. जीवन मे कुछ करना है तो मन को मारे मत बैठो

Scanned with OKEN Scanner

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर भाषा शिक्षण

डॉ० कुमार मृत्युंजय राकेश
प्राचार्य
चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
काँटी, मुजफ्फरपुर

भाषा का स्थान मनुष्य के जीवन मे अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह वह माध्यम है जिससे मनुष्य न केवल अपने विचारों और भावनाओं को दूसरों के समक्ष प्रकट करता है अपिंतु वह चिन्तन, मनन करता है और ज्ञान को भी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सफलतापूर्वक संप्रेषित करता है। भाषा विचार और भावनाओं के संप्रेषण के साथ–साथ साहित्य और मनोरंजन का साधन भी है। इस दृष्टि से भाषा का स्थान व्यक्ति के जीवन मे अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मनुष्य के विकास की यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण योगदान भाषा का ही है। वह भाषा ही है जो उसे अन्य पशुओं से अलग करती है। इन सबके के बाबजूद पिछले कुछ वर्षो से भाषा के अध्ययन पर इतना ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह तथ्य इस बात से हमारे सामने निकल कर आ रहा है क्योंकि पिछले कुछ वर्षों से छात्र न तो हिन्दी के माध्यम से ही शुद्ध–शुद्ध अपना विचार अभिव्यक्त कर पा रहे हैं, न ही अंग्रेजी के माध्यम से। भाषा में शुद्धता की यह समस्या प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर भाषा शिक्षण में शुद्धता की ओर ध्यान न देने के कारण उत्पन्न हो रही है। छात्रों को भाषा लेखन,श्रुत लेख, सुलेख आदि की शिक्षा सही तरीके से नहीं दी जा रही है, जिससे कि भाषा लेखन मे होने वाली त्रुटियों का परीक्षण नहीं किया जा पा रहा है। हमें यह ध्यान देना होगा कि भाषा की इस समस्या को लेखन परीक्षण, त्रुटि जाँच आदि से ही दूर किया जा सकता है। वर्तमान समय में न ही अध्यापकों द्वारा इस विषय पर पर्याप्त बल दिया जा रहा है, न ही अभिभावकों द्वारा ही इस विषय को गंभीरता से लिया जा रहा है।

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर ही भाषा में अशुद्धि की समस्या को दूर किया जा सकता है, लेकिन भाषा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की समस्या वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या बनती जा रही है। यहाँ तक कि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों में भी शुद्धता के प्रति न तो कोई आग्रह है, न ही शिक्षकों की लेखनी मे शुद्धता पाई जा रही है। भाषा में अशुद्धि की समस्या परंपरागत रूप से विकराल होती जा रही है।

इस विषय पर समय रहते ही हमें ध्यान देना होगा अन्यथा हम भाषा को दोषपूर्ण होने से नहीं बचा सकेंगे। इस समस्या को हम अध्यापक, अभिभावक और छात्रों के सम्मिलित प्रयास से ही दूर कर सकते हैं।

भाषा के अध्यापन के लिए सरकार को विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता है। भाषा में शुद्धता के लिए खिचड़ी भाषा से बचने की भी नितांत आवश्यकता है। हमें पुस्तकों की भाषा और उसकी शुद्धता पर भी विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। सम्पादन के लिए कड़े नियम बनाए जाने चाहिए। समाचार पत्रों की भाषा पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। भाषा की अशुद्धता से पिछले कुछ वर्षों से प्रेस भी अछूता नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में अंग्रेजी भाषा की शुद्धता को लेकर जितना आग्रह बड़ा है उतना हिंदी भाषा की शुद्धता को लेकर जागरूकता नहीं है। हिंदी भाषा की अशुद्धि में खिचड़ी भाषा (जिसे आजकल लोग गर्व से हिंग्लिश कह रहे हैं) का अधिक योगदान है।

भाषा संस्कृति की वाहक होती है, इसके प्रति शुद्धता का दृष्टिकोण हमें संस्कृति की शुद्धता की भी याद दिलाता रहेगा। अतः यह आवश्यक है कि हम भाषा की शुद्धता और उसके कौशलों के विकास पर पर्याप्त बल दें।

Scanned with OKEN Scanner

बदलते परिवेश में मातृभाषा के प्रति अरुचि

प्रहलाद सिंह यादव
प्रवक्ता – हिंदी
डी० एल० एड० (विभाग)

हमारी प्राचीन भूमि भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का संगम रही है। सदियों से भारत ने असंख्य भाषाओं और बोलियों में दिव्यता के दर्शन किए हैं,जो अपनी पूरी जीवंतता के साथ हमारी रंग–बिरंगी सांस्कृतिक विविधता में रची–बसी रही है। आत्म निर्देशन हेतु एवं भावों की अभिव्यक्ति के लिए तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण करने के लिए मनुष्य को किसी न किसी भाषा का प्रयोग करना पड़ता है, अपने अन्तर्द्वन्द्वो,उद्वेगों तथा मनोभावों का अभि–व्यंजन जितनी सुंदर, सरल, स्पष्ट एवं सुगठित रूप से अपनी मातृभाषा में कर सकता है, उतना किसी अन्य भाषा में नहीं।

सांस्कृतिक और भाषाई विविधता भारतीय सभ्यता का आधार रही है। हमारे मूल्य और मर्यादाएं ,आदर्श और आकांक्षाएं, जीवन और साहित्य ये सभी हमारी मातृ – भाषाओं में ही अभिव्यक्ति पाते रहे हैं ।भाषाओं और बोलियों की यह समृद्ध विविधता हमारी स्थानीय ज्ञान परंपराओं की वाहक है, जिन पर आज लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। यह स्थिति उस मानसिकता के कारण बनी, जिसमें अपनी ही मातृभाषा को लेकर हीन भावना रखने का मानसिक दबाव रहता है।

मातृभाषा के प्रति तिरस्कार की यह मानसिकता जीवन के आरंभ से ही माता–पिता द्वारा बदलते परिवेश के कारण अपने बच्चों को दिया जाने लगा है। जबकि मातृभाषा ही सब विषयों, ज्ञान विज्ञानों का मूलाधार होती है। वह स्वयं एक विषय नहीं है, वरन् अन्य विषयों का आधार– स्तंभ है। मनुष्य के भीतर कभी–कभी कुछ ऐसे विचार उठते हैं जो बिना मातृभाषा के व्यक्त नहीं हो पाते। मातृभाषा को सीखने के लिए किसी पाठशाला की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि यह उसे स्वतः ही अपने परिजनों द्वारा उपहार स्वरूप मिलती है। वर्तमान समय में बच्चे अपनी मातृभाषा में गिनती पढ़ना– लिखना भूलते जा रहे हैं। आजकल बालकों को वन(One), टू(Two), थ्री (Three) को लिखना–पढ़ना जितना आसान है, उतना ही कठिन 1(एक),2(दो) और 3(तीन)इत्यादि का लिखना और पढ़ना ।

मातृभाषा के महत्व का वर्णन हिंदी के मूर्धन्य नाटककार, गद्यकार, कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने गद्य "भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है" में सुंदर दोहे के रूप में किया है –

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के,मिटे न हिय को सूल।।"

महात्मा गाँधी जी ने भी मातृभाषा को बालक के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण मानते हुए लिखा है कि– "बालक के मानसिक विकास में मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है, जितना बालक के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध"।

अतः निष्कर्ष के रूप मे कहा जा सकता है कि पाश्चात्य ज्ञान के कारण वर्तमान समय में लोगों को आपस में,सार्वजनिक स्थानों पर , संगोष्ठियों में, तथा कार्यालयों में अपनी मातृभाषा में वार्तालाप करने में जिस हीनता का अनुभव होता है। "वह देखने योग्य है" इन सभी स्थानों पर लोग विदेशी भाषा के माध्यम से ही अपने ज्ञान को प्रदर्शित करना चाहते हैं,जिससे कि लोगों में उनका महत्व बना रहे। जबकि संविधान में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कार्यालय की भाषा मातृभाषा या मानक भाषा होगी ।

....

Scanned with OKEN Scanner

तू जिंदगी को जी

डॉ० रश्मि बाला
सहायक आचार्या
चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन
काँटी, मुजफ्फरपुर बिहार

तू जिंदगी को जी उसे समझने की कोशिश न कर,
तू जिंदगी को जी उसे समझने की कोशिश न कर।
सुन्दर सपने के ताने–बाने बुन,
उसमे उलझने की कोशिश न कर।
चलते वक्त के साथ तू भी चल,
उसमे सिमटने की कोशिश न कर।
अपने हाथों को फैला, खुल कर साँस ले,
अन्दर ही अन्दर घुटने की कोशिश न कर।
मन में चल रहे युद्ध को विराम दे,
खामख्वाह खुद से लड़ने कि कोशिश न कर।
कुछ बातें भगवान पर छोड़ दे,
सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर।
जो मिल गया उसी में खुश रह,
जो सुकून छीन ले वो पाने की कोशिश न कर।
रास्ते की सुन्दरता का लुफ्त उठा,
मंजिल पर जल्दी पहुँचने की कोशिश न कर।
तू जिंदगी को जी उसे समझने की कोशिश न कर,
तू जिंदगी को जी उसे समझने की कोशिश न कर।

Scanned with OKEN Scanner

कामयाबी

डॉ० रश्मि बाला
सहायक आचार्या
चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन
कॉंटी, मुजफ्फरपुर बिहार

कामयाबी मिलेगी कभी
अपनी हिम्मत बनाये रखना,
जिंदगी के हर मोड़ पर
सपने सजाये रखना।
मुश्किलें आयेंगी पग–पग पर
अपना धैर्य बनाये रखना,
न व्यथित होना मुश्किलों से
मंजिल को याद रखना।
डर कर कुछ न मिलेगा
जीत का जज्बा जगाये रखना,
डर के आगे जीत है
ये जरूर याद रखना।
मूल मंत्र है कामयाबी का
अपने लक्ष्य का ख्याल रखना,
एक दिन कदम चूमेगी कामयाबी
यही उम्मीद लगाये रखना।

Scanned with OKEN Scanner

बालक में "सृजनात्मकता एवं समायोजनशीलता" का विकास

नितु कुमारी
सहायक आचार्या–बाल मनोविज्ञान
बी०एड० विभाग

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के कारण ही व्यक्ति अपनी असीमित आकांक्षाओं एवं आवश्यकता की पूर्ति के लिए विविध प्रकार के कार्य करता है। उनमें से अधिकांश प्रयास उसके अर्थ उपार्जन से सम्बंधित होता है। उसका प्रभाव उसके सामाजिक आर्थिक स्तर पर पड़ता है। सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव वहाँ रहने वाले बालकों की शिक्षा संबंधी आकांक्षा, प्रेरणा, उपलब्धि एवं सृजनशीलता पर पड़ता है। उदाहरण के तौर पर एक संपन्न परिवार का बालक प्रारंभ से ही अपनी सामाजिक आर्थिक उन्नति करके कुछ कर दिखाने के विषय में सोचता है। जबकि अभाव से धिरा हुआ एक विपन्न परिवार का बालक प्रारंभ काल से ही अपना ध्यान रोजी–रोटी पर केंद्रित करने के लिए बाध्य होता है। इस प्रकार उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर का बालक अपने स्वस्थ शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति सरलता से कर लेता है और अच्छी शिक्षा द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धि अर्जित कर सुसमायोजित जीवन व्यतीत करता है। उनमें शिक्षा द्वारा सृजनात्मकता का विकास होता है। जिससे उनका जीवन सुखमय एवं आनंदपूर्ण होता है। किंतु निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बालकों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जिससे वह उचित प्रेरणा एवं शैक्षिक सामग्रियों के अभाव से प्रायः वंचित रह जाता है। उचित शिक्षा के अभाव में उनमें पर्याप्त सृजनशीलता का विकास नहीं हो पाता है, जिससे वे जीवन भर निराशा के दुष्चक्र में फंसे रहते हैं। इसके अलावा कभी–कभी यह भी देखने को मिलता है, कि अत्यधिक उच्च व अत्यधिक निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं सृजनशीलता में कमी होती है।

इसी वातावरण में ही उसकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। बालक के लिए चारों ओर के वातावरण में उपस्थित सभी व्यक्ति और वस्तुएं समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं होती हैं। इनमें से कुछ अधिक महत्वपूर्ण होती है और कुछ कम। बालकों की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति कभी सही ढंग से हो जाती है और कभी उसकी इस प्रकार की पूर्ति में कुछ ना कुछ बाधा पड़ती है या समय अधिक लगता है। प्रत्येक बालक का वर्तमान एवं भविष्य का जीवन सुखी और आनंद में तभी हो सकता है जब उसका व्यवहार समायोजित प्रकार का होता है। बालकों को अनेक व्यक्तियों और वस्तुओं से समायोजन स्थापित करना पड़ता है।

बालकों की सृजनात्मकता के सहायक और विरोधी कारक इसी वातावरण में निहित होते हैं बालको में सृजनात्मक विकास के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान देना अति आवश्यक है।

1. माता–पिता और संरक्षक को चाहिए कि वह बालकों के लिए समुचित वातावरण की व्यवस्था करें, जिससे उनमें सृजनात्मकता का उचित मात्रा में विकास हो सके।
2. बालक में धनात्मक सामाजिक अभिवृत्ति का विकास हो इस बात का संरक्षकों को ध्यान रखना चाहिए।
3. बालक को अपनी जिज्ञासा व्यक्त करने की खुली छूट होनी चाहिए साथ ही साथ उन्हें अपने जिज्ञासा का प्रश्न पूछ कर शांत करने की सुविधा होनी चाहिए।
4. बालकों के परिवारिक जीवन को जब समय और नियमबद्ध कर दिया जाता है अथवा बालक को परिवारिक कार्यों में हर समय साथ रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो बालकों की सृजनात्मकता अवरुद्ध हो जाती है।
5. संरक्षकों को चाहिए कि बालकों को अपूर्ण और टूटे–फूटे खिलौने और साधन इस प्रकार उपलब्ध कराएं कि बालकों को सृजनात्मकता के विकास के लिए साधन उपलब्ध हो सके।
6. परिवार और विद्यालय में बालकों के लिए कठोर और प्रभुत्वशाली वातावरण नहीं होना चाहिए इससे उनकी सफलता में विघ्न होता है।

इन उचित बातों का हम ध्यान रखकर बालक को सृजनात्मकता एवं समायोजन दोनों में एक उचित संबंध स्थापित करने में हम बालकों की मदद कर सकते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

माध्यमिक सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में छात्रों की शिक्षा व्यवस्था का तुलनात्मक शैक्षिक अध्ययन

नितु कुमारी
सहायक आचार्या
बी०एड० विभाग

माध्यमिक स्तर का शिक्षण कार्यक्रम ही विद्यार्थी के संपूर्ण जीवन के विभिन्न चरणों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है इस स्तर पर बच्चे अपने बाल्यावस्था की सीमा को पार कर किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं। इस स्तर पर बच्चों के विकास की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए ताकि उनका सर्वांगीण विकास संभव हो सके।

यह वह अवस्था है जहाँ उनका विकास सर्वाधिक होता है इस अवस्था में शिक्षक उनको जिस रूप में चाहे ढालकर सही दिशा की ओर आगे बढ़ाकर उनके स्वस्थ भविष्य का निर्माण कर सकते हैं, लेकिन हमारे भविष्य निर्माता रूपी शिक्षक कभी–कभी अपने कर्तव्य निष्ठा को छोड़कर आलस्य को अपनाकर विद्यालय समय सारणी को पूरा कर देते हैं। हमारे सरकारी विद्यालय के आदर्श शिक्षक पूरा समय कार्यालय संबंधी कार्य में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि वह चाह कर भी अपनी कक्षा नहीं ले पाते हैं कहीं–कहीं यह देखने को मिलता है कि शिक्षक को उनके मूल कार्य (शिक्षण कार्य)से हटाकर गैर शैक्षिक कार्य में संलग्न किया जाता है, जिससे वे अपने कर्तव्य का सही से निर्वाह नहीं कर पाते हैं। जबकि गैर सरकारी विद्यालय में शिक्षक का पूरा ध्यान उनके शिक्षण को ही बेहतर करने की ओर केंद्रित किया जाता है ,और उसको बेहतर करने के लिए हर संभव सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षण कार्य बाल केंद्रित होने के साथ–साथ उनमें आधुनिक शिक्षण सहायक सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है जिससे कि बच्चों का ध्यान अधिगम में अधिक से अधिक लग सके, वहीं दूसरी तरफ हमारे सरकारी विद्यालयों में पुरातन से चली आ रही शिक्षण पद्धति अपनाई जा रही है जिससे कि बच्चे का अधिगम सरल नहीं हो पाता है।

भौतिक साधन की उपलब्धता भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। गैर सरकारी विद्यालयों में कक्षाएं छात्र के स्तर के अनुरूप डिजाइन की जाती है साथ ही अच्छी कक्षा हेतु सभी संसाधन उपलब्ध होते हैं, वहीं दूसरी ओर सरकारी विद्यालयों में भौतिक संसाधन के अभाव के कारण बच्चे विद्यालय भी नहीं जाना चाहते हैं , कहीं–कहीं विद्यालय में शुद्ध पेयजल और शौचालय की उचित व्यवस्था भी नहीं होती है ,गर्मियों में पंखों के अभाव में गर्मी की बेचैनी से जूझते रहते हैं साथ ही ठंड में डेक्स बेंच के अभाव में जमीन पर बैठकर पढ़ाई करते है। एक ओर हमारे भारत को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाने का संकल्प है , वहीं हमारा भविष्य गर्मी और ठंड से परेशान है।

जाने क्यों? हमारे सरकारी विद्यालय के प्रबंधकों को ऐसा लगता है ,कि बच्चे विद्यालय में अधिक समय तक रहेंगे तो अधिक सीखेंगे जबकि ऐसा नहीं है ,समय की अधिकता के कारण शिक्षक और बच्चे दोनों ही ऊब जाते हैं। गैर सरकारी विद्यालय में सरकारी विद्यालय की अपेक्षा समय सारणी का समय कम होता है फिर भी बच्चे यहाँ अधिक सीखते हैं।

गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाता है ,उसको बेहतर करने के लिए समय–समय पर कार्यक्रम कराए जाते हैं, माह में एक बार अभिभावक –शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया जाता है ,ताकि अभिभावक के सुझाव को भी ध्यान में रखकर छात्रों को शिक्षित किया जाए। इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन सरकारी विद्यालय में नहीं होता है जिससे कि बच्चों का बेहतर विकास संभव नहीं हो पाता है।

शिक्षा का अर्थ सिर्फ बच्चों को किताबी ज्ञान प्रदान करना नहीं है बल्कि उनका संपूर्ण विकास करना होता है, इसके लिए आवश्यक है कि बच्चों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए। गैर सरकारी विद्यालय के पाठ्यक्रम इसी पर आधारित होते हैं जबकि सरकारी विद्यालय में इसकी कल्पना मात्र की गई है लेकिन इसको सही रूप से कार्यान्वित करने के लिए बच्चों के सिखाने की प्रक्रिया पर ध्यान नहीं दिया जाता है ।

अतः माध्यमिक स्तर पर छात्रों को सही रूप से शिक्षा देने की उचित एवं व्यापक व्यवस्था सिर्फ गैर–सरकारी विद्यालयों में नहीं बल्कि सरकारी विद्यालयों में भी हो तो निःसंदेह हमारे कर्णधारों की नींव मजबूत होगी , शिक्षकों को पुरातन से अपनाई जाने वाली शिक्षण शैली को छोड़कर छात्रों के अनुरूप कौशल पूर्ण शिक्षण शैली को अपनाना होगा तथा अपने शिक्षण पद्धति में आधुनिक युग के शिक्षण सामग्री को शामिल करना होगा, शिक्षण को मनोरंजन बनाना होगा साथ ही विद्यालय विभाग को समय की अधिकता से अपना ध्यान हटाकर शिक्षा की गुणवत्ता पर अपना ध्यान आकृष्ट करना होगा साथ ही विद्यालय की स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान रखना होगा और प्रत्येक विद्यालय में सफाई कर्मचारी की नियुक्ति करनी होगी। इस तरह की कार्यशैली को अपनाकर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था को सुदृढ़ कर उन्नत एवं स्वस्थ भविष्य की कल्पना की जा सकती है।

Scanned with OKEN Scanner

मानव जीवन के लिए 'कला बोध'

सुभाष कुमार
सहायक–आचार्य
बी०एड0 विभाग

अखिल भुवन कला से सराबोर है। संपूर्ण ब्रह्मांड कला की कलात्मकता से परिपूर्ण है। साहित्य ,संगीत एवं चित्रांकन कला के विभिन्न रूप है। साहित्य का एक शब्द, संगीत का एक स्वर और चित्रांकन की एक रेखा मानव के मन एवं चक्षु को हर्षित एवं मंत्रमुग्ध कर देते हैं। कला की परिभाषा वृहत है। कला का प्रयोजन अवर्णनीय है।

प्रकृति के कण–कण में विद्यमान कला की चैतन्य अस्मिता के दर्शन वही कर सकता है, जिसकी अंतः चेतना समस्त विकृतियों से पृथक् मनुष्यत्व के शाश्वत सृजन में जुटी हो। इस धरती पर कला किसी घृणित विध्वंस की कथा नहीं बल्कि हृदय के निरंतर निर्माण की एक अनवरत कोशिश है। अचेतन को चेतना प्रदान करने की आत्मशक्ति का एक विशिष्ट उपक्रम है। 'कला' जिसकी निश्छल साधना में ही शाश्वत युग–निर्माण की तमाम संभावनाएँ निहित होती है। कलाकार अपनी कृति में मानव मन की कल्पना का समावेश करके सत्यम, शिवम् एवं सुन्दरम् के भाव को प्रस्तुत करता है, जिसका स्वरूप क्षण–क्षण नवीनता को प्राप्त होता है ,और आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति का कारण बनता है। नयन और मन के इस सुन्दर 'कला' की कोई जाति, धर्म, बंधन या मजहब नहीं होता। ध्यान से सोचें तो सत्य का आभास हमें जरूर मिलेगा।

क्योंकि इस ब्रह्मांड में होने वाली प्रत्येक क्रिया–अनुक्रिया का संबंध 'कला' से है। कला कर्म योग, ध्यान योग और भक्ति योग की ऐसी निर्मल त्रिवेणी है ,जिसकी पवित्रता में किसी को कोई संदेह नहीं हो सकता। कला सर्वस्व समर्पण खोजती है – सर्वस्व समर्पण... इस संसार में जो जितने समर्पित भाव से इसकी निर्मल साधना करता है ,उसको उसी के अनुरूप इसमें दक्षता की प्राप्ति होती है। ऐसे मेरे ख्याल से कला की कोई निश्चित पहचान नहीं होती है, इसके कई आयाम होते हैं। संस्कृत वांग्मय में भारतीय मनीषियों ने कला की '64' विधाओं का उल्लेख किया है ,जिसमें साहित्य–कला, संगीत–कला, चित्रकला एवं नाटक आदि प्रमुख है।

आज कमोवेश संपूर्ण मानव जाति स्वयं जैविक, रासायनिक, आणविक युद्ध जैसी महाविनाशलीला का स्वांग रचने में दृढ़ता के साथ प्रवृत्त है ,क्योंकि आधुनिक जीवन –शैली के भौतिकवादी आग्रहों ने मनुष्य को मनुष्य का कट्टर शत्रु बना दिया है। त्रासदी के इस होड़ में शामिल मानवों ने अपने बने बनाए घरौंदें (प्रकृति) को उजाड़ कर समूचे वातावरण को विषाक्त बना दिया है। अतएव भूमंडलीकरण की इस अंधी दौड़ में एकमात्र कला की निश्चल समन्वित साधना ही प्रकृति–मानवीय पवित्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योंकि आज भी जहाँ– जहाँ कला की नैष्ठिक स्थापना होगी, आंतरिक आराधना होगी, वहाँ–वहाँ प्राकृतिक –मानवीय नैतिक मूल्यों को एक दृढ़ आधार मिलेगा।

Scanned with OKEN Scanner

एक और एग्जाम : विद्यार्थी जीवन

ओम शंकर उपाध्याय
प्रवक्ता–हिन्दी
डी०एल०एड्० विभाग

माँ की कॉल,,
माँ – ट्रेन मिल गई ना बेटा,,
बेटा –हाँ मिल गई,,
माँ– बैठने को सीट मिली या नही? बोला था, रिजर्वेशन करा लिया कर !
बेटा –अरे मिल गई सीट पूरा डिब्बा खाली है, अरे वो रिजर्वेशन जल्दी मे नहीं करा पाया,,
माँ– ठीक है,,किसी से लड़ना झगड़ना नही,, और कोई कुछ खिलाए तो खाना मत,,जब पहुँच जाना तो होटल मे रुक जाना, और अच्छी जगह ,,खाना खा लेना ।

बेटा –हाँ हाँ पता है,,अरे रुक जाऊँगा,,खा भी लूँगा ।

ये था ,,वो सच जो सबको दिखता है,
पर असल मे,
वो लड़का, जो कभी घर मे एक मच्छर काटने पर, सो नहीं पाता था, जो अच्छा खाना ना मिलने पर, पूरा घर सर पे उठा लेता था,

वो अब सारी रात स्टेशन मे गुजारने लगा है, वो भी वहीं सो जाता है, एक मोहनी नमकीन और बिस्कुट खाकर रात गुजारने लगता है, वो अब माँ से झूठ बोलने लगा है, उसे नहीं पता , यही एग्जाम आखिरी है, या अभी ये सफर और कितना लम्बा होगा, उसे ये भी नहीं पता, की एग्जाम देने के बाद,
जब कोई पूछता है, कैसा गया?
तो उसे क्या जवाब दे,
लाखों स्टूडेंट्स बैठते हैं एग्जाम में, जिसमें सेलेक्शन सिर्फ कुछ हजार का ही होना है, पर उम्मीद उन लाखों के परिवारों की टूटती है,
इन स्टूडेंट्स को तो ये भी नहीं पता, की जॉब की तैयारी करते करते, वो कहाँ पहुँच गए,
हार के बाद, फिर से उठना होगा, हर बार, शून्य से आरम्भ करना होगा,
पता है , उसे पता है, उसे सब कुछ पता है , कि वो बेहतर कर रहा है, पर उसे फिक्र है, कि क्या होगा ना जाने आगे !!

दही चीनी की बातें तो बहुत पुरानी सी लगती है, अब यकीन भी नही होता, क्योंकि, स्टूडेंट्स की जिंदगी मे जो कड़वाहट घुली है, उससे किस्मत तो नही बनती होगी,

सच कहूँ तो बचपन कब निकल गया , पता ही नहीं चला, घरों से कब जिम्मेदार बनने के सफर में निकल गए, या निकाले गए !
आसान नहीं होता, उस उम्र में घरों से दूरियाँ बनाना जिस वक्त हमें उनकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है, आसान नही होता अपने बड़े बड़े सपनों को बुनना,या उन्हें सच बनाने के लिए पूरी दुनियाँ के खिलाफ खड़ा होना !
जीत के मुसाफिरों के शहर में , सपनों को हकीकत बनाने वाले स्टूडेंट्स के साथ ,कोई खड़ा होना ही नहीं चाहता, यहाँ तक आते आते ना जाने कितना कुछ पीछे छूट जाता है, वो लोग जिनके होने से हमें उम्मीद मिलती थी, वो कब बदलते हुए दिखते हैं, वो कोई दूसरा समझ ही नहीं सकता,

फिर से बोलता हूँ, ये बात सिर्फ संघर्ष की नही है, क्योंकि स्टेशन में रात गुजारने वालों को, दो समोसों मे 2 दिन के पेपर का आना जाना कर लेना, संघर्ष से तो नहीं डरे होंगे!

संघर्ष की पहली सीढ़ी तो उसी दिन पार हो जाती है, जिस दिन माँ बोलती है, तू अपना ध्यान रखना, एग्जाम तो होते रहते हैं, एग्जाम जिंदगी थोड़े ही है....

Scanned with OKEN Scanner

एग्जाम का सफर, पता है,,कठिन कब बन जाता है––– जब माँ किसी मुहल्ले के लोगों व रिश्तेदारों से बोलती है,
कि अरे वो .... पढ़ने में बहुत होशियार है, पर एग्जाम के टाइम थोड़ा तबीयत खराब हो गई थी, तो अच्छे से पढ़ नही पाया था, इसलिए कुछ अंको से सेलेक्शन नही हुआ, अभी उसके और भी एग्जाम हैं, उसमे हो जायेगा,

सच बोलूँ तो ये सब डरावना लगता है,
अब वो स्टूडेंट्, ऐसे दौर मे पहुँच गया है, जहाँ रिश्तेदारों से बात करनी बंद कर चुका है, कोई खास दोस्त भी नही है,

प्रेम में सिर्फ यादें बची हों,अब उसे हार–जीत से फर्क कम पड़ने लगा है, क्योकि उसे जिंदगी ने वो सिखा दिया, जो कभी किताबों मे पढ़ाया ही नही गया।

और एक बात... अगर आप इन स्टूडेंट को किसी स्टेशन में, ट्रेन में, बसों में, ऑटो में,रुके ,पड़े, थमे देखें तो अगर इनका हौसला ना बढ़ा पाएँ, तो इन्हे कमजोर होने का अहसास मत कराइयेगा,

वो स्टूडेंट्स है, रुकेंगे, उठेंगे,फिर कोशिश करेंगे,पर हार नहीं मानेंगे,
क्योंकि एग्जाम जिंदगी तो नहीं है, पर अब उसके लिए उससे कम भी नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner

असम की प्रतिभाशाली "चंद्रप्रभा सैकियानी" का शैक्षिक आन्दोलन

राजेश राम
प्रवक्ता– सामाजिक विज्ञान
डी०एल०एड्० विभाग

जीवन परिचय–1900 के दशक में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम के अलावा असम में उस समय महिलाओं को अधिकार और शिक्षा से वंचित किया जा रहा था। जहाँ एक देश विभाजन ,अलगाव, जाति और धार्मिक अत्याचारों से जूझ रहा था। एक और विडंबना वहां की थी कि छोटी लड़कियों को बुनियादी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने से वंचित कर दिया जाता था। इनका जन्म 16 मार्च 1901 में कामरूप जिले के दोई सिंगारी गांव में हुआ था। वह रतिराम मजूमदार जो गाँव के गाँव बूढ़ा (मुखिया) थे। उनके 11 बच्चों में से सातवीं बच्ची चंद्रप्रभा थी। इनकी शिक्षा सामान्य विद्यालय में हुई थी जिसमें बालक बालिकाएं दोनों थे लड़कियों के लिए कोई विशेष विद्यालय नहीं था। उस समय नौगांव मिशन स्कूल में पढ़ने के लिए पहली बार छात्रवृत्ति दी गई और दिलचस्प बात यह है कि इनकी छोटी बहन रजनीप्रभा असम की पहली महिला डॉक्टर बनीं, परंतु हिंदू और ईसाई छात्रों के बीच स्पष्ट अंतर से वे अवगत हुई। वहाँ छात्राओं का जबरन धर्म परिवर्तन कर छात्रावास में रहने की अनुमति दी जाती थी। यहाँ पर चन्द्रप्रभा बडी बहादुरी से अपनी आवाज उठाकर अधिकारियों से लड़ाई लड़ी और सभी धर्म की लड़कियों को छात्रावास मे रहने की अनुमति दिलाई ।

13 साल की उम्र में इन्होंने एक छप्पर के नीचे एक स्कूल की स्थापना की जिसमें केवल लड़कियां ही पढ़ सकती थीं ।

17 साल की उम्र में अफीम पर भी रोक लगाने के लिए एक विशाल जनसमूह को संबोधित किया।

सन् 1921में असहयोग आंदोलन में भी प्रतिभागी बनीं और जेल भी गयीं।

सन 1926 में असम प्रादेशिक महिला समिति की स्थापना की ,जिसमें महिलाओं को स्वरोजगार ,शिक्षा का महत्व, बाल विवाह पर रोकथाम, हथकरघा ,हस्तकला, लिंग, जाति, भेदभाव इत्यादि से मुक्ति दिलाने का कार्य की। जो कि आज आदर्श के रूप में पालन की जाती है।

- इन्हें भारत सरकार ने सन् 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया।
- भारत सरकार ने सन् 2002 में इनके सम्मान के रूप में डाक टिकट जारी किया

अंततः 13मार्च 1972 में इनकी मृत्यु हो गई।

'देवि, माँ, सहचरि, प्राण "भारतीय परंपराओं में नारी के इतने रूप बताएं गए हैं। परंतु पुरुष महिलाओं को पैरों का धूल बनाकर रखते हैं। जिसके कारण महिलायें शिक्षा से वंचित हो जाती हैं और अपने जीवन का निर्णय लेने के अधिकार से भी वंचित हो जाती है। अर्थात् सभी कालों में स्त्री शिक्षा का स्वरूप साक्ष्य रूप में देखने को मिलता है।

चंद्रप्रभा सैकियानी ने अपने शिक्षा शक्ति के माध्यम से महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, सामाजिक ,आर्थिक, राजनीतिक, जाति, रंग–रुप, तथा धर्म इत्यादि से उन्हें सशक्त करने की भूमिका निभाई। जिससे महिलायें आज हमारे समाज में बड़ी से बड़ी बुलंदियाँ, मुकाम को हासिल करने मे योग्य रही। जिससे वर्तमान समय में समाज महिलाओं से प्रभावित होकर उन्हें किसी भी कार्य में भागीदारी लेने की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है।

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षक–शिक्षा एक आदर्श चरित्र बनाने की पहल

डा० आर० के० एस० यादव
सहायक आचार्य–बी० एड० विभाग

सर्वप्रथम शिक्षा क्या है ''शिक्षा वह प्रक्रिया है जो हमारे अंतर्निहित शक्तियों को पूर्णता प्रदान करती है। हमारे आचार विचार तथा व्यवहार में परिवर्तन कर हमें नए ज्ञान व कौशल की खोज के लिए प्रेरित करती है'' किंतु क्या शिक्षा के इन उद्देश्यों की पूर्ति या शिक्षा का कल्याण ईंट और पत्थरों में निहित है, या भरपुर उपादानों में या कागज पर लिखे शिक्षा सम्प्रत्यता में? अथवा भिन्न–भिन्न व्यवस्थाओं में? नहीं बिल्कुल नहीं। यह कल्याण केवल सुविधा तथा सुसंस्कृत पुरुषों और नारियों के उन सूक्ष्म प्रभावों में निहित है जो छात्रों पर प्रभाव डालते हैं। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि शिक्षक ही वह धुरी है ,जिसके चारों ओर शिक्षा का चक्र गतिशील होता रहता है ।

जिन्हें शिक्षा और शिक्षण का अनुभव है वे इसे पूरी तरह स्वीकार करते हैं कि किसी भी स्कूल की शिक्षा– शिक्षण की सफलता रहती है यदि शिक्षक योग्य तथा कर्मनिष्ठ है तो वह एक वृक्ष के नीचे बिना किसी शिक्षण उपादान के छात्रों को बहुत कुछ सिखा सकता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा का इतिहास इसका प्रमाण है।

शिक्षक शिक्षा और शिक्षण शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो मानविक आंतरिक क्षमताओं का अनुकूलतम विकास समग्र रूप से करती है ताकि व्यक्तित्व एवं सामाजिक दृष्टि से उपादेयता को बढ़ाना संभव हो सके। दूसरी ओर शिक्षक एक ऐसी महत्वपूर्ण कड़ी है जो शिक्षा को अपने कार्य शिक्षक द्वारा छात्रों तक प्रसारित करती है। अतः शिक्षण कार्य समस्त कार्यों में सर्वोपरि और परम आवश्यक माना जाता है क्योंकि ज्ञान दान के समान कोई दूसरा कोई परहिताय निर्दिष्ट कार्य नहीं है, परंतु यह भी परम सत्य है कि शिक्षण की प्रक्रिया निश्चित रूप से शिक्षक –शिक्षा पर ही निर्भर करता है। शिक्षण कला एक विशिष्ट कला है, इस कला में शिक्षक – शिक्षा और शिक्षण नैतिक विज्ञान दोनों का अपना महत्व है। शिक्षक – शिक्षा का लक्ष्य मानव संसाधन का विकास करना है क्योंकि समाज, समुदाय, और राष्ट्र के लिए उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण मानव ही मानव संसाधन कहलाने के योग्य है । मानव शिक्षण कला में अध्यापक शिक्षा और शिक्षण नैतिक विचार एक की कमी से भी कुशल शिक्षण का होना संभव नहीं है।

अब प्रश्न यह है कि एक कुशल शिक्षक या आदर्श शिक्षक में कौन–कौन सी योग्यताएं होनी चाहिए । एक आदर्श शिक्षक के क्या मानदंड होने चाहिए।

चूँकि प्रकृति के आदर्श भाव को सिर्फ एक आदर्श शिक्षक ही समझ सकता है । एक शिक्षक की शिक्षा राष्ट्रीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण होनी चाहिए । शिक्षक को भारतीय संस्कृति में जो स्थान प्राप्त है वह अपनी महत्ता को और अधिक बढ़ाता है।

कोलम्बस ने कहा है कि–'' शिक्षक एक ऐसा अद्वितीय मानव है जिसे स्वयं एवं बालकों को शिक्षित करने के कार्यों के लिए अपना प्रयोग प्रभावात्मक एवं कुशलतापूर्वक करना चाहिए''

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के तहत हमारे बहुवर्गीय समाज शिक्षा को सर्वव्यापी और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े और संकीर्ण संप्रदायवाद हिंसा अंधविश्वास एवं भाग्यवाद के मूल्यों को विकासोन्मुख व मुख्य बनाने में अध्यापक सूत्रधार होता है समाज की शिक्षा शैक्षिक ,नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों आदि को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी भी अध्यापकों को वहन करनी होती है अतः अध्यापकों को अपने उत्तरदायित्वों को प्रभावी ढंग से निर्वहन करने हेतु शिक्षक– शिक्षा अपरिहार्य है ।

आज शिक्षक के उत्तरदायित्व तथा कार्यों का क्षेत्र व्यापक हो चुका है। एक शिक्षक को भारतीय संस्कृति में जो साधन प्राप्त है उस दृष्टि से एक आदर्श शिक्षक में निम्नलिखित मानदंड या गुण होने चाहिए ।

(1) शारीरिक व्यक्तित्व गुण
(2) व्यावहारिक गुण
(3) बौद्धिक गुण
(4) कार्य क्षेत्र से संबंधित गुण
(5) विषय वस्तु से संबंधित गुण

उपरोक्त सभी गुण एक आदर्श शिक्षक सफल शिक्षक एवं उत्तम शिक्षा के लिए होना परम आवश्यक है ये सभी गुण एक आदर्श शिक्षक के लिए सफलता के सोपान की तरह होते हैं। अर्थात् कहने का तात्पर्य है कि एक आदर्श शिक्षक तैयार करने के लिए एक विशिष्ट प्रकार के पाठ्यक्रम का निर्माण शिक्षक– शिक्षा में किया जाना चाहिए।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का संक्षिप्त जीवन परिचय।

डॉ. राजीव कुमार
प्रवक्ता– गणित
डी0 एल0 एड0 विभाग

श्रीनिवास रामानुजन एक महान भारतीय गणितज्ञ थे। रामानुजन एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति थे जिन पर न केवल भारत को अपितु पूरे विश्व को गर्व था। उन्होंने अपने विलक्षण ज्ञान से गणित के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए। जिसके कारण उन्हें पूरे विश्व में एक महान गणितज्ञ के रूप में जाना जाता है। श्रीनिवास रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर 1887 को तमिलनाडु के कोयंबटूर जिले के इरोड नामक गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था ।

इनके पिता का नाम श्री निवास अयंगर था तथा इनकी माता जी का नाम कोमल तम्मल था। जब रामानुजन 1 वर्ष के थे तभी उनका परिवार कुंभकोणम में जाकर बस गया। 5 वर्ष की उम्र में रामानुजन का दाखिला कुंभकोणम के प्राथमिक विद्यालय में करा दिया गया। प्राथमिक परीक्षा में इन्होंने पूरे जिले में सर्वाधिक अंक प्राप्त किया। रामानुजन का व्यक्तित्व बड़ा सरल और सौम्य था। रामानुजन इतने मेधावी छात्र थे कि स्कूल के समय में ही वे कॉलेज स्तर तक गणित पढ़ा लिया करते थे। 13 वर्ष की अल्पायु में ही बालक रामानुजन ने एस.एल.लोनी के द्वारा लिखित पुस्तक के मास्टर बन चुके थे। 17 वर्ष की उम्र में इन्होंने बरनौली नंबरों की जांच की और दशमलव के 15 अंकों तक EUAER कांस्टेंटवैल्यू की खोज कर डाली। परंतु 22 वर्ष की उम्र में ही रामानुजन का विवाह उनसे 10 वर्ष की छोटी कन्या जानकी के साथ संपन्न हुआ जिसका परिणाम यह हुआ कि 11वीं कक्षा में गणित को छोड़कर सभी विषय में अनुत्तीर्ण हो गए। वर्ष 1918 में उनकी उम्र लगभग 31 वर्ष की थी तभी उन्होंने 120 सूत्र की स्थापना कर दिया। जिसे अंग्रेजी के प्रोफेसर जी. एच.हार्डी के पास भेजा गया तथा उनके शोध को पढ़ा गया और उन शोध पत्रों से अत्यधिक प्रभावित होकर उन्हें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय आने का न्योता दिया गया। पुनः अक्टूबर 1918 में रामानुजन को त्रिनिटी कॉलेज की सदस्यता प्रदान की गई।

ऐसा करने वाले वे पहले भारतीय थे। रामानुजन ने अपने 33 वर्ष कि अल्प आयु में लगभग 3884 समीकरण बना डाले। जिनमें से कई तो आज भी अनसुलझा रह गया है। जो कि विश्व के सामने आज भी चुनौतियों से भरा पड़ा है।

परन्तु दुर्भाग्यवश 26 अप्रैल 1920 को टी0 बी० की बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो गई जो कि भारतवर्ष की बहुत बड़ी क्षति हुई। ऐसे थे हमारे भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन ।

Scanned with OKEN Scanner

गणित का अन्य विषयों के साथ सहसंबंध।

पी.कुमार
प्रवक्ता (गणित)
डी0.एल0.एड0 विभाग।

गणित ऐसी विधाओं का समूह है जो संख्याओं, मात्राओं, परिमाणों, रूपों और उनके आपसी रिश्तों, गुण, स्वभाव इत्यादि का अध्ययन करती है। गणित एक अमूर्त या निराकार और निगमनात्मक प्रणाली है।

जिस प्रकार मोरों में शिखा और नागों में मणि का स्थान सबसे ऊपर है, उसी प्रकार सभी वेदांग और शास्त्रो में गणित का स्थान सबसे ऊपर है।

गणित विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एक महत्वपूर्ण औजार है। भौतिकी, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि गणित के बिना नहीं समझे जा सकते। ऐतिहासिक रूप से देखा जाय तो वास्तव मे गणित की अनेक शाखाओं का विकास ही इसलिए किया गया कि प्राकृतिक विज्ञान में इसकी आवश्यकता आ पड़ी थी। कुछ हद तक हम सब के सब गणितज्ञ हैं। अपने दैनिक जीवन में रोजाना ही हम गणित का इस्तेमाल करते हैं, उस वक्त जब समय जानने के लिए हम घड़ी देखते हैं, या फिर फुटबॉल, टेनिस या क्रिकेट खेलते समय बनने वाले स्कोर का लेखा– जोखा रखते हैं। जलयान या विमान का चालक मार्ग के दिशा–निर्धारण के लिए ज्यामिति का प्रयोग करता है। भौगोलिक सर्वेक्षण का तो अधिकांश कार्य ही त्रिकोणमिति पर आधारित होता है। यहाँ तक कि किसी चित्रकार के आरेखण कार्य मे भी गणित मददगार होती है। गणित का विज्ञान में इतना महत्व है तथा विज्ञान की इतनी शाखाओं में इसकी उपयोगिता है कि महान गणितज्ञ एरिक टेंपल बेल ने इसे विज्ञान की सामग्री और सेविका की उपज बताया है।

गणित की अपनी अलग ही भाषा एवं लिपि होती है जिसे पहले जानना–समझना जरूरी होता है। शायद यही कारण है कि दैनिक जीवन से असंबंधित मानकर इसे समझने की दृष्टि से कठिन माना जाता है, जबकि हकीकत मे यह वास्तविक जीवन के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा ही नहीं है, बल्कि उसी से इसकी उत्पत्ति भी हुई है। यह विडम्बना ही है कि ज्यादातर लोग गणित के प्रति विमुखता दिखा कर उससे दूर भागते हैं, जबकि वस्तुस्थिति यह है कि जीवन तथा ज्ञान के हर क्षेत्र मे इसकी उपयोगिता है। ज्यादातर दैनिक जीवन की गणित की मूल धारणाओं का ही सार है और इसलिए इसे आसानी से समझा– बूझा जा सकता है। गणित का संबंध सभी मुख्य विषयों से होता है। गणित कुछ विषयों का पूर्ण रूपेण सहारा है। अतः शिक्षकों को चाहिए कि अवसर आने पर गणित का संबंध अन्य विषयों के साथ अवश्य करें। इससे छात्रों को गणित के महत्व एवं उपादेयता का ज्ञान होगा।

Scanned with OKEN Scanner

मौलिकता की पहचान है हमारी लोक संस्कृति (मुजफ्फरपुर जिले के संदर्भ में)

शिवप्रिया
प्रध्यापिका डी0.एल0.एड0
चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन

संस्कृति जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं किन्तु उसे परिभाषा में समेटना मुश्किल है। कुछ अंशों में संस्कृति, सभ्यता से भिन्न है अर्थात् हम कह सकते हैं कि सभ्यता हमारे पास है जो मूर्त है लेकिन संस्कृति इसमें व्याप्त गुण है जिसे महसूस किया जा सकता है, जैसे महल, सड़क, मोटर, पोशाक और अच्छा भोजन ये सब सभ्यता है, मगर पोशाक पहनने और भोजन करने की जो कला है वह हमारी संस्कृति है।

जहाँ तक मुजफ्फरपुर की लोक संस्कृति की बात की जाए तो इसमें भाषाई समन्वय दृष्टिगोचर होता है, क्योंकि तमाम बिहारवासी इसे स्वीकार करते हैं कि मुजफ्फरपुर बिहार की सांस्कृतिक राजधानी है। यहाँ की संस्कृति इतनी परिपक्व और विकसित है कि इसमें कतिपय अन्य संस्कृतियों के समन्वय का रूप हमें देखने को मिलता है।

यदि हम प्राचीन मुजफ्फरपुर की लोक संस्कृति पर दृष्टि डालें तो महावीर, बुद्ध, माँ जानकी से इसका संबंध तथा उसके विकसित लोक संस्कृति की स्पष्ट झलक हमें यहाँ के समाज पर दृष्टिगोचर होती है। माँ जानकी की जन्मभूमि पूर्व मुजफ्फरपुर और वर्तमान सीतामढ़ी का पुनौरा गांव है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ माँ जानकी का जन्म हुआ और पालन पोषण जनक जी ने किया। उनकी शादी की चर्चा सर्वव्याप्त है। किन्तु लोक संस्कृति में ऐसा कहा जाता है कि जानकी जी की जब विदाई हुई तो मुजफ्फरपुर एवम् मिथिला की संस्कृति के अनुरूप उन्हें खोइछा दी गयी। जनकपुर से अयोध्या जाने के क्रम में खोइछा के धान से कुछ धान उन्होंने नैहर की सम्पन्नता के लिए रास्ते–रास्ते छींट दीं। आज भी यहाँ के लोग कहते हैं कि माँ सीता का आर्शीवाद है जो सीतामढ़ी, रक्सौल, मोतिहारी, सुगौली, बेतिया से नरकटियागंज तक विभिन्न प्रकार के सुगंधित धान की पैदावार होती है।

गौतम बुद्ध ने अपने वैशाली प्रवास में कहा था कि उत्तर बिहार में आग और बाढ़ का भय सदा रहेगा। लोग अक्सर कहते हैं कि होली के बाद से अगलगी प्रायः शुरू हो जाती है और जून के अंत से प्रायः बाढ़ का प्रकोप बढ़ जाता है। यह अब लोक संस्कृति से जुड़ी बातें हो गयी हैं।

रूप, सौन्दर्य, नृत्य और गायन में भी मुजफ्फरपुर की लोक संस्कृति अपना अक्षुण्ण स्थान रखती है। मुजफ्फरपुर का वर्तमान अम्बारा चौक राज नर्तकी आम्रपाली की जन्मभूमि है। जातक कथा में यह वर्णित है कि वैशाली नगरी की एक प्रसिद्ध नृत्यांगना को बुद्ध ने सारे नियमों से परे जाकर बौद्ध धर्म में दीक्षित करने की अनुमति प्रदान की। यह हमारे मुजफ्फरपुर की सांस्कृतिक धरोहर थी।

अतः मुजफ्फरपुर ने अत्यन्त प्राचीन काल से अपनी संस्कृति की छाप छोड़ी है। बुद्ध, महावीर और राम के काल में भी इसका अस्तित्व था और इसकी लोक संस्कृति भी थी क्योंकि आज भी सीता की शादी और विदाई से संबंधित गीत महिलायें गाती हैं जिसमें लोक संस्कृति की झलक मिलती है।

आज भी यहाँ की महिलायें शादी ब्याह के अवसर पर आम–महुआ के सन्निकट दो पेड़ों में धागा बाँधकर उसकी पूजा करती हैं, और शादी के पूर्व के रस्म को अदा करती है जो कि काफी पुरानी लोक संस्कृति है।

वास्तव में यहाँ के कृषक आम के परिपक्वता के उत्सव को व्यक्ति के विवाह के समान ही मानते हैं। वृक्ष फल देने लायक हो जाते हैं तो आम और महुआ की सांकेतिक शादी की जाती है।

लोकगीत एवम् लोक गायन के क्षेत्र में यहाँ भोजपुरी एवम् मिथिला का प्रभाव परिलक्षित होता है। तरह–तरह के बज्जिका भाषा के गीतों की रचना भी हुई है जो विभिन्न उत्सवों में गाया जाता है। जन्म से मृत्यु तक के विभिन्न संस्कारों में जो गाथा एवम् गीत का प्रचलन इस जिले में है वह मूल रूप से मुजफ्फरपुर के होते हुए मिथिला से भी प्रभावित है।

हिन्दू संस्कृति की तरह ही मुजफ्फरपुर में भी सोलह प्रकार के संस्कार प्रचलित हैं जो इस प्रकार हैं– विवाह, चौठारी कर्म, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, जूटिका बंधन, चूड़ाकरण, कर्णवेध,

Scanned with OKEN Scanner

उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन एवम् अन्तयेष्ठि संस्कार। मुजफ्फरपुर की संस्कृति में इस्लाम धर्मावलम्बियों, ईसाइयों तथा सिखों की भी संस्कृति का गहरा प्रभाव है, अर्थात् यहाँ की संस्कृति को समन्वित संस्कृति कहा जा सकता है।

अंततः हम कह सकते हैं कि इस भूमि में वर्द्धमान महावीर ने जन्म लेकर भारतीय इतिहास को पटल पर ला दिया। बुद्ध ने इसे अभय आशीष दिया। गाँधी जी ने चम्पारण आंदोलन के क्रम में मुजफ्फरपुर के भूमिहार ब्राह्मण कॉलेज (अब लंगट सिंह कॉलेज) में निवास कर सारी योजना बनायी। बाल गंगाधर तिलक, जवाहरलाल नेहरू, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य जे0 बी0 कृपलानी, डॉ0 हरिवंश राय ''बच्चन'', डॉ0 रामधारी सिंह 'दिनकर', रामवृक्ष बेनीपुरी इत्यादि महान विभूतियों ने अपने चरण रज से इसे संस्कारित किया है। इन जैसे अनेकों विभूतियों का संस्कार यहाँ के जनमानस पर पड़ा और मुजफ्फरपुर की लोक संस्कृति काफी पल्लवित एवम् पुष्पित हुई।

परंतु वर्तमान में इस वैश्विकरण के दौर में यहाँ की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अतः हमें अपनी लोक संस्कृति को बचाने हेतु अपने आने वाले पीढ़ियों को इससे अवगत कराने की जरूरत है।

Scanned with OKEN Scanner

क्या रखा है

शशि रंजन प्रसाद देव
प्रवक्ताः इतिहास (डी.एल.एड.)
चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन

घर दरवाजा खिड़की सब बंद पड़ा है,
बाहर सूरज जगमग अंदर बल्ब जला है,
कमरे के एक कोने में एक अक्स खड़ी है,
सामने उसके लम्हों का एक ढेर पड़ा है।
सब साफ–साफ दिखता है बल्ब बुझे तो,
कमरे में फिर अँधेरा रौशन हुआ है,
तेरी याद में पंखे ने फिर आवाज करी है,
टेबल पे अब भी तेरा समां रखा है।
दीवारों को घूरता रहता है रातों को,
पता नहीं तेरे कितने राज छुपा रखा है,
तकलीफ नहीं पर सबब रहा होगा कोई,
पर पता नहीं तूने सीने में क्या रखा है।
गर बात कई दफना रखे तुमने सीने में,
फिर यही बता दो कि मुझे कहाँ रखा है,
ऐसे जो रुसवा करके चले गए हो तुम,
तुम्हीं बताओ फिर जीने में क्या रखा है।

Scanned with OKEN Scanner

चन्द्रशील

पुष्कर प्रिया
बी.एड.(द्वितीय वर्ष)
सत्र 2021–23
रोल नं०–19

चन्द्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन
चीतहा गाँव में जन्म लिया,
उत्सव हुआ घर आँगन ।
किसको पता था वह बालक,
नाम रौशन कर जाएगा ।
चम्पारण का नाम सुनहरे,
अक्षरों में लिखा जाएगा ।

शिक्षा का अलख जगा कर,
उसने खोले अनेकों स्कूल ।
राजा अपने राज्य में पूजते,
विद्वान हर दिल पर रहते आसीन ।
कोई देश को जाने जाते हैं,
विदेशों में भी उनका परचम लहराया है।
मर के भी वह मरते नहीं,
नाम उनका अमर हो जाता है ।
चंद्रशेखर द्विवेदी नाम था जिनका,
चम्पारण का गौरव कहलाते हैं ।

उनके बताए पद चिन्हों पर,
सपनों को उनके साकार किया ।
उनके सुपुत्र ने शिक्षा के मार्ग को,
अपने स्तर से विस्तार किया ।
सिर्फ स्कूल ही नहीं,
टीचर ट्रेनिंग कॉलेज बनवा कर ।
कितने होनहार बच्चे निकले,
कितने शिक्षक बने काबिल ।
भविष्य निर्धारण करने वाले,
धन्यवाद आपको "चन्द्रशील" ।।

Scanned with OKEN Scanner

BARRIERS

HARSHA
B.Ed. 1st year
Session - 2022 - 24

All those girls who have many barriers
Not having a single opportunity to raise their careers,
They endure all those restrictions
And are forced to follow the custodian's instructions
All those girls who are confined in a room
And blindly follow that the moon is the sun and the sun is the moon
Why girls are always evaluated lesser than boys
They do lots of work in the age of playing with toys
Why always girl's fetus are found in the trash on roads
Can't they carry their life loads?
Please trust them and give them their wings
Instead of giving them the engagement rings
Just forget what the society says
Let them find their own ways
Yes they will falter they will molt, when they fly
But if you are with them, they will definitely touch the sky.

Scanned with OKEN Scanner

गुरु से शिष्य और शिष्य से गुरु की पहचान

Name - Sandeep kumar
Class – D.El.Ed Second year
Roll no - 15

सावन का महीना, चारों तरफ हरियाली, मंद मंद हवा के झोंके के बीच साईकिल पर सवार गुलेटन मास्टर स्कूल जा रहे हैं। स्कूल से 100 मीटर दूर एक चारागाह है, उसी चारागाह में बकरियों को चराता एक लड़का सड़क किनारे बैठ खुरपी से रास्ते को खोदकर खेल रहा है ।एक नजर लड़के पर पड़ती है और साइकिल की पैडल मारते मास्टर साहब आगे बढ़ जाते हैं। पीछे से एक तुतली आवाज आती है क्या खबर है मास्टर जी ?सबको बुलाते सब को पढ़ाते मेरी उलझन को सुलझाएँ जी, इतनी आवाज सुनते ही गुलेटन मास्टर की साइकिल जाम हो गई उन्होंने पीछे मुड़कर देखा एक दुबला पतला लड़का जिसके आँखों में चमक है वह अपनी बात कह रहा है ।मास्टर साहब के पीछे मुड़कर देखते ही वह सिहर जाता है और अपनी आँखें बंद कर लेता है वह सोचता है कहीं अपराध तो नहीं हो गया।

गुलेटन मास्टर बड़े सह्रदय आदमी थे लेकिन चेहरा मोटा तगड़ा भड़कदार था जिसे देख कोई भी सकुचाने लगता था। लेकिन कोमल मृदुभाषी आवाज अनायास ही उन्हें अपनी ओर खींच लेती थी। गूलेटन मास्टर नया बहाली में हेड मास्टर बन कर आए थे। गाँव के लोगों से खूब मेलजोल था उनके आने के बाद स्कूल की रौनक बदल गयी थी कल ही गांव के बड़े बुजुर्गों की मंडली में चर्चा गुलेटन मास्टर की चली थी। एक सुर में सभी कह रहे थे कि गुलेटन मास्टर दो चार साल स्कूल में रह गए तो गाँव के बच्चों का भविष्य बदल जाएगा उसी बात को ध्यान में रखकर जुगनू गुलेटन मास्टर से अपने दिल की बात कह दिया था।

मास्टर साहब साइकिल से उतरे और बच्चे की पीठ पर हाथ रख बोला क्या उलझन है बालक? पीठ पर हाथ पडते ही जुगनू का सारा शरीर काँप गया उसने सोचा अन्याय हो गया बेकार में किसी को टोकना नहीं चाहिए, परंतु मधुर आवाज में गूंजे स्वर, क्या उलझन है बालक? एक नई ऊर्जा शरीर में ला दिया अपनी आँखें खोल जुगनू भर नजर गुलेटन मास्टर को निहारता रहा, गुलेटन मास्टर को लगा कि लड़का डरा सहमा लग रहा है तो उन्होंने बड़े प्यार से दुलारा पुचकारा और पूर्ण स्नेह से सराबोर कर दिया ।इतना प्यार स्नेह जुगनू जीवन में पहली बार पा रहा था मास्टर साहब के हाथों को पकड़ उन्हीं की गोद में समा जाना चाह रहा था लेकिन एक पल में ही अपना चेतना को वापस कर गुलेटन मास्टर से अपने दिल की सारी बातें बता देना ही उचित समझा।

मैं इसी गाँव के दुखिया का बेटा जुगनू हूँ मुझे पढ़ने का बड़ा शौक है लेकिन मेरी सौतेली माँ मुझे पढ़ने से रोकती है ।मेरे मन की इच्छा पूरा करने का उपाय कीजिए मैं दिन भर इसी चारागाह में घास काटता हूँ, बकरियों को चराता हूँ और शाम में सौतेली माँ के गर्म सलाखों से दागा भी जाता हूँ। धैर्य रखो जुगनू तुम्हारे उलझनों का उपाय मेरे पास है। आज शाम मैं तुम्हारे पिता से बात करता हूँ इतना कह कर गुलेटन मास्टर अपनी साइकिल पर सवार हो स्कूल चल पड़े रास्ते भर इन्हीं उलझन में उलझते स्कूल तक पहुँच गए।

शाम होते ही गुलेटन मास्टर दुखिया के घर गए और जुगनू का स्कूल में नाम लिखाने के लिए प्रेरित करने लगे स्कूल में नाम लिखाने की बात सुन चौखट पर बैठे जुगनू की सौतेली माँ नागिन की तरह ऐंठते हुए आयी और गुलेटन मास्टर पर बरसने लगी। आए हैं बड़का मास्टर बनने कमाएगा तो खाएगा, कलम दो, किताब दो, कपड़ा दो, खाना दो, है दम तो लिख दो। इतना सुनते गुलेटन मास्टर मुस्कुराए और बोले ऐ मैडम जी! सुनिए ना केवल स्कूल में नाम दर्ज करा दीजिए, भोजन, कपड़ा, किताब, कलम सारी सुविधाएं मुहैया कराएंगे ।आपका बच्चा बड़ा होनहार है मुझे आशा है वह बड़ा नाम करेगा। हूँह! आए हैं बड़ा नाम करने। पढ़ लिख के त बड़ा लाट गवर्नर हो जाएगा देखते हैं । लात पटकते हुए दुखिया की पत्नी घर में चली गई। दुखिया कुछ कागज निकाल कर गुलेटन मास्टर को दिया और कहा मास्टर साहब औरत जात ही ऐसी होती है आप बुरा ना मानेंगे जुगनू का नाम लिख दीजिएगा हमें स्कूल में आने का टाइम नहीं है। गुलेटन मास्टर खुशी–खुशी कागज लिए और जुगनू के नाम लिख देने के वादे के साथ चले गए।

समय बीतता गया जुगनू स्कूल में अव्वल आता। पढ़ाई–लिखाई खेलकूद सभी विधाओं में जुगनू श्रेष्ठ कर रहा था। गाँव में महामारी का प्रकोप हो गया सभी लोग घरों में बंद थे कोई किसी की मदद नहीं कर रहा था जुगनू ने स्कूल में पढ़ा था कि निस्सहायों की मदद करना हर नागरिक का कर्तव्य है। उसे चुपचाप रहा नहीं गया उसने गाँव वालों की हर तरह मदद की उसके साहसिक कार्यों की प्रशंसा देश दुनिया में होने लगी। 15 अगस्त के परेड में जुगनू के साहसिक कार्यों के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए चयन हुआ परेड में शामिल होने के लिए जुगनू गुलेटन मास्टर और उसके माता–पिता आमंत्रित हुए। आज पूरा दुनियाँ में टी.वी. शो में बार–बार जुगनू ,मास्टर और उसके माता–पिता के न्यूज आ रहे थे पूरा गाँव जवार का सर गर्व से ऊँचा हो गया था। सभी एक दूसरे को बधाई दे रहे थे गुलेटन मास्टर का जय–जय कार हो रहा था। सभी खुश थे गुलेटन मास्टर का सीना चौड़ा हो गया था। आज गुरु से शिष्य की और शिष्य से गुरू की पहचान हो रही थी।

Scanned with OKEN Scanner

हमारे गुरू

Khushbu Kumari
D.El.Ed (1st Year)
Session- 2022-2024
Roll No.- 31

गुरू हमारे सबसे महान।
हम देते उन्हें सम्मान।
माता पिता और देव समान।
देते हैं हमको वे ज्ञान।।

मंदिर मस्जिद में है क्या?
पत्थर की मूर्ति में क्या?
घर में शिक्षा माता का।
है स्कूल मेरे दाता का।।

गुरू हमारे सबसे महान।
हम देते उन्हें सम्मान।।

जन्म दिए हम उनको पूजे।
कर्म लिखे हम उनको खोजें।
उसके बाद गुरु का स्थान।
जो देते जीवन का ज्ञान।।

गुरु हमारे सबसे महान।
हम देते हैं उन्हें सम्मान।।

Scanned with OKEN Scanner

कोशिश कर

नाम– निशु कुमारी
वर्ग – बी०एड०(प्रथम वर्ष)
क्रमांक–40
सत्र– 2022–24
कॉलेज– चंद्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
कांटी मुजफ्फरपुर।

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नही तो, कल निकलेगा।
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा,
मरूस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बंजर मे भी फिर, फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी, बल निकलेगा।
सीने में उम्मीदों को, जिंदा रख,
समंदर से भी, गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की,
जो कुछ थमा– थमा है, चल निकलेगा।
कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नही तो, कल निकलेगा।

Scanned with OKEN Scanner

माता-पिता

सुरभि कुमारी
क्रमांक-44
सत्र-2022-2024
बी०एड०-प्रथम वर्ष

मेरा साहस, मेरी हिम्मत, मेरे पहचान हैं पिता।
मेरी छोटी सी खुशी के लिए,
सब कुछ सह जाते हैं पिता।।
पूरी करते हर मेरी इच्छा,
उनके जैसा नहीं कोई अच्छा।
शायद रब ने देकर भेजा,
फल ये अच्छे कर्मों का।।
उसकी रहमत, उसकी नेअमत,
उसका है वरदान पिता।
मेरी ताकत, मेरा जीवन, मेरी दुनियाँ हैं पिता।।
मेरा हौसला, मेरा रुतबा, मेरी शान हैं माता।
मेरी छोटी सी गलती को,
चुप-चाप सह लेती है माता।
पूरी करते हर मेरी ख्याहिशें
उनके जैसा नहीं कोई अच्छा।।
मुझको हिम्मत देने वाली,
मेरी अभिमान है माता।
मेरी ताकत, मेरी दुनियाँ, मेरी जन्नत है माता।।

Scanned with OKEN Scanner

विलासितापूर्ण जीवन और खुशी

Saurabh kumar
Roll no. -CCE/13
B.Ed. Session- 2021-2023

आप अपनी खुशियों का श्रेय वस्तुओं को देते हैं, क्योंकि वर्तमान समय विलासितापूर्ण जीवन के लिए प्रचलित है। जीवन भर आप चीजों का पीछा करते हैं लेकिन इच्छाएं कभी खत्म नहीं होती हैं और संतुष्टि कभी शुरू नहीं होती। यदि संसार में खुशी कहीं पर होती तो एक ही वस्तु को समान रूप से समान मात्रा में सभी को खुशी देना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है। एक शराबी जब शराब पीता है तो उसे अपार खुशी मिलती है, लेकिन दूसरा व्यक्ति जो शराब नहीं पीता, उसे शराब के प्रति दृढ़ नाराजगी होती है। अतः हम कह सकते हैं कि खुशी वस्तु में नहीं हो सकती। फिर खुशी क्या है?,कहां है? 'खुशी मन की अवस्था है।'

खुशी निर्भर करती है कि आप कितनी इच्छाओं का संग्रह जीवन में रखते हैं और उसमें से कितनी इच्छाएं पूर्ण हो सकती है। यदि संग्रहित इच्छा अधिक हो और पूर्ण होने वाली इच्छा कम तो आपकी खुशी घटेगी लेकिन यदि इच्छाओं का संग्रह कम हो और पूर्ण होने वाली इच्छा अधिक हो तो आपकी खुशी बढ़ेगी। अतः आप अपनी खुशी कैसे बढ़ा सकते हैं?या तो पूर्ण होने वाली इच्छाओं की संख्या बढायें, या संग्रहित इच्छाओं की संख्या कम करें। हम सब किसे वरीयता देते हैं? पूर्ण होने वाली इच्छाओं की संख्या बढ़ाना या संग्रहित इच्छाओं की संख्या कम करने पर। निश्चित तौर पर हम लोग इच्छाओं को पूर्ण करने को वरीयता देते हैं।
आपने बहुत सारी इच्छाएं पूरी की है लेकिन क्या आपकी खुशी बढ़ी है? यह आवश्यक नहीं है क्योंकि जैसे ही आप अपनी इच्छा पूरी करते हैं। आप और अधिक इच्छाओं का संग्रह करने लगते हैं। उदाहरण के लिए आपकी एक इच्छा है कि आपके पास एक स्मार्ट घड़ी होनी चाहिए। जब इस इच्छा की पूर्ति के लिए आप किसी मॉल में जाते हैं तो वहाँ आप एक नई बेल्ट, एक नई मोबाइल इत्यादि देखते हैं तथा उसे भी प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। यहाँ आपकी खुशी बढ़ने और इच्छा घटने की वजाय आपकी इच्छा बढने लगती है तथा खुशी कम होने लगती है।

अतः हम कह सकते हैं कि हमारी संग्रहित इच्छा अनंत है। इनमें से कुछ इच्छाओं की प्राप्ति भी कर ली जाए तो भी यह अनंत बना रहता है। बहुत सारी इच्छा पूरी करने पर भी खालीपन नहीं जाता, क्योंकि वह वास्तविक नहीं है। मानव में इच्छा कभी खत्म नहीं होती है और संतुष्टि कभी शुरू नहीं होती है। इसलिए अधिक संतुष्टिदायक क्षेत्रों की ओर बढ़ें, खुशी स्वतः बढ़ जाएगी। आप असल में खाली नहीं है। आप पूरी तरह भरे हुए हैं। केवल अपनी पूर्णता का ज्ञान प्राप्त करें और सारी तलाश खत्म हो जाएगी।

Scanned with OKEN Scanner

कौन है

रूपाली कुमारी
क्रमांक– 17
डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
सत्र– 2022–24

कौन है बे।
कहाँ को आया है।
कहाँ को जायेगा।
खुले हुए पर्दे पे,
क्या कुछ दिखलायेगा।
तन की कारीगरी से।
मन की कारीगरी से।
धन की कारीगरी से।।
क्या कुछ दिखलाएगा?
क्या कुछ दिखलाएगा?
अरे धरती है सुना।
अरे अंबर भी सुना।।
अरे हमने भी सुना।
अरे इसने भी सुना।।
न अंतिम है सीमा।
न अंतिम है जीना।।
कहते है भगवन।
तुम्ही में है सीमा।।
कहते है गुरुवर।
तुम्हीं से है जीना।।
तुम्हीं साध्य–सारथी।
तुम्हीं हो लाभार्थी।।
न काहू को देना।
न काहू से लेना।।
है मंगल है मंगल।
है मंगल है बेला।।
मैं खुद समझू अलबेला।
तू खुद समझ अलबेला।।

Scanned with OKEN Scanner

जिन्दगी

लकी कुमारी
क्रमांक —97
बी०एड० प्रथम वर्ष
सत्र — 2022—24

कभी हँसना है कभी रोना है।
पर खत्म खुद को नहीं करना है।।

आँखे नम है चमक इनमें कम है।
पर तुझे खुद को नहीं खोना है ।।

पैसा शोहरत सिर्फ तमाशा है।
खुद का जीना खुशी का खजाना है।।

तू बहुमूल्य, जीवन तेरा अमूल्य है।
इससे ज्यादा ना कुछ मिलना है।।

Scanned with OKEN Scanner

स्त्री की सहनशीलता

शबनम
सत्र–2022–2024
बी०एड०–प्रथम वर्ष

कलम उठाऊँ, तो क्या लिखूँ?
गीत लिखूँ, या प्यार तुम्हारा।

जलन तुम्हारी लिख डालूँ,
या घुटन का संसार तुम्हारा।

माथे की बिंदिया लिख डालूँ,
या सुंदर सिंदूर तुम्हारा।

आँखों की मुस्कान लिखूँ,
या मन के डर का तार तुम्हारा।

कहो समर्पण लिख डालूँ,
या साहस दो चार तुम्हारा।

Scanned with OKEN Scanner

मेरे पापा

रिजवाना खातून
क्रमांक—90
सत्र—2022—2024
बी०एड०—प्रथम वर्ष

मेरे पापा, सबसे अच्छे पापा ।
दिल के सच्चे मेरे पापा,
माँ जन्म देती तो पालन पोषण करते पापा,
माँ गोद से रख देती हमें तो,
झट दौड़ गोद उठाते पापा,
मेरे पापा, सबसे अच्छे पापा ।
टूटी—फूटी लोरियाँ सुनाकर सुलाते,
खुद जमीन पर सोते ,
पर हमारे लिए खाट लगाते पापा,
मेरे पापा, सबसे अच्छे पापा ।
दिन—रात मेहनत कर, हमारी जरूरत पूरी करते,
खुद भूखे रहकर हमें खिलाते ,
खाना नहीं खाती तो, थाली में राजा—रानी का हिस्सा लगाकर,
सारा हिस्सा हमें खिलाते पापा,
मेरे पापा, सबसे अच्छे पापा ।
कंधे पर बैठाकर आसमान की सैर कराते,
तो कभी पीठ पर बैठाकर दुनियाँ घुमाते,
पीठ पर चीनी के बोरे बनाकर मुझे बेचते,
कोई खरीदने को मांगे तो नहीं देते,
कितना बहुमूल्य हूँ मैं, सबको बताते पापा,
मेरे पापा, सबसे अच्छे पापा ।
मेरे जीवन की एक ही ख्वाहिश है ,
उसे भी पूरा कर दो ना, पापा हाँ कर दो ना पापा,
अगले जन्म में मेरे ही बनोगे ना पापा,
मेरे पापा, सबसे अच्छे पापा ।

Scanned with OKEN Scanner

अच्छा इन्सान

प्रवीण कुमार
क्रमांक: 48
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)
सत्र 2020–22

जीवन में कुछ बने न बने पर अच्छा इंसान जरूर बनना चाहिए। क्योंकि अच्छे इंसान का कद्र जीते जी तो होता ही है, मरने के बाद भी लोग याद करते हैं।

एक अच्छा इंसान सबके लिए सोचता है,सबको साथ लेकर चलता है ।अच्छे व सच्चे इंसान का साथ प्रकृति भी देती है।

एक अच्छा इंसान सुख मिलने पर न ज्यादा खुश होता है, और न दुःख मिलने पर घबराता है ।वह उदासीन प्रवृति का होता है।

अच्छे इंसान का व्यक्तित्व बहुत सारी अच्छाइयों को अपने में समेटे रहती है। इसलिए हमें अच्छा इंसान बनना चाहिए।

स्त्री के विविध रूप

निहारिका सिंह
क्रमांक– ६०
बी.एड. द्वितीय वर्ष)
सत्र 2020–22

चहेरे पर एक मुस्कान के साथ, वो सभी काम कुशलता के साथ करती है। कितनी भी थकी हुई हो, सब कुछ करती है जिसकी आवश्यकता होती है। हमेशा आपके हित में आपका समर्थन करती है चाहे जो भी हो, बिना किसी शर्म और झिझक के, प्यार को व्यक्त करती है जो उसे मिला है। यह वो व्यक्ति है जो आपको केवल चंद शब्दों से बेहतर महसूस करा सकती है, सूनी राह पे आशाओं के नये दीप जलाके नई राह नई दिशा दिखा सकती है। वो आपकी चट्टान होती है जब आपको उसकी आवश्यकता होती है, तो वो आपके पक्ष में रहती और निर्विवाद रूप से आपका समर्थन करती है। वो सब कुछ करती है जो आप करना चाहते हैं लेकिन कर नहीं सकते, भले ही उसे कोई सुराग न हो कि कैसे करना है पर प्रयत्न जरूर करती है। वो एक माँ, एक बहन और एक पत्नी के रूप के अलावा एक औरत भी है, जो इंसान को दुनियाँ में ला भी सकती है और दुनियाँ से मिटा भी सकती है।

Scanned with OKEN Scanner

बेटा, बेटी एक समान

रौशनी प्रिया
क्रमांक– 40
डी.एल.एड.–प्रथम वर्ष
सत्र– 2022–24

बेटा, बेटी एक समान,
दोनों है अपनी संतान।
कला है ईश्वर का वरदान।
भेद से करो न उसका अपमान।
बेटी को भी हुनर सिखाओ,
उसको भी अवसर दिलाओ।
देकर दोनों को कला का ज्ञान,
कर लो कला का तुम सम्मान।।

Scanned with OKEN Scanner

माँ

विकास कुमार झा
क्रमांक–42
सत्र–2021–2023
बी०एड०

किसी गाँव में एक माता जी रहती थीं, उनके सात पुत्र एवं एक पुत्री थी। उनके पति थल सेना में कार्य करते थे। माताजी अपने सभी बच्चों का पालन पोषण बड़े अच्छे तरीके से करती थीं। उनकी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी, फिर भी माता जी सभी पुत्रों की पढ़ाई–लिखाई करवा रही थीं, समय के साथ पुत्री का विवाह कर दीं। माता जी भी अपने समय की उस गाँव की पढ़ी लिखी प्रथम बहु थी जिस कारण उनके सभी बच्चों की भी पढ़ाई अच्छी तरह से हुई। उनके प्रथम पुत्र ने शादी नहीं की, दूसरे पुत्र की शादी के लिए माता जी बेचैन थीं, दूसरा पुत्र सरकारी नौकरी कर रहा था दूसरे पुत्र की शादी अंततः हो गई, लेकिन कुछ समय तक माता जी और बहु का संबंध अच्छा रहा। समय बीतने के साथ माता जी के तीसरे पुत्र की भी शादी हुई, उसके बाद उनकी बड़ी बहु और उनमें मतभेद होने लगा। धीरे–धीरे दूसरे बेटे से भी माताजी की दूरी बढ़ने लगी। समय बीतते हुए माताजी के सभी पुत्र की शादी हो गई परिवार बढ़ गया क्योंकि पोता–पोती भी हो गये थे। लेकिन समय का प्रभाव कहें या माताजी का दुर्भाग्य कि उनके 6 पुत्र उनको देखना तक पसंद नहीं करते प्रणाम तो दूर की बात है फिर भी माँ तो माँ होती है। गाँव में लोग उनके पुत्र के बारे में बुरा–भला बोलते तो वह नाराज हो जाती। वह अपने बेटे की खबर लेने के लिए किसी –किसी से पूछती मेरा बेटा ठीक है ना? माता जी की भी उम्र 85 वर्ष हो चुकी थी। वह अपने चौथे नंबर के बेटे के साथ रहती और उनका मन बाकी के 6 बेटों के लिए छटपटा जाता बेटे–बहु ऐसे जो मिलना तक पसंद नहीं करते एक दिन ऐसा आया कि अचानक महामारी में माताजी चल बसीं। उनके सभी पुत्र माता जी के अंतिम संस्कार में सम्मिलित होने के लिए आए, और सभी रो रहे थे। कि आज मेरी माँ चली गई। क्या पुत्र ऐसे होते हैं, जो जीवन भर माँ को कष्ट दे और मरने के बाद उनकी इज्जत करे। अतः माता–पिता की सेवा ही भगवान की सेवा है हमें अपने माता–पिता की सेवा करना ही धर्म समझना चाहिए। अगर इस दुनियाँ में भगवान है, तो इसके मूर्त रूप माता–पिता हैं।

Scanned with OKEN Scanner

एक आम लड़की के बिखरते सपने

राग‍िनी कुमारी
क्रमांक– 95
सत्र– 2022–24
छात्राध्यापिका
बी.एड. प्रथम वर्ष
चंद्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन

मैं पहले आसमान की उड़ती चिड़िया थी,
जब मैं छोटी गुड़िया थी।
मैं भी आसमान में बादलों की सैर करती थी,
और सपनों को चाँद सितारों की तरह सजाती थी,
जब मैं छोटी गुड़िया थी।

पल भर में ही सारे अरमान और बादल भरी उड़ान,
क्षणभुंगर हो गई थी,
जब मैं गुड़िया से बिटिया हो गई थी।
तब आसमान ने भी मेरी बादल भरी उड़ान (सपनों)
को बूंदो की तरह जमीन पर बिखेर डाला,
क्योंकि अब मैं गुड़िया नहीं थी, अब मैं बिटिया हो गई थी।

जिन्दगी

शशि रंजन कुमार
क्रमांक– 65
बी०एड० प्रथम वर्ष

कभी सुना है तुमने मजदूरों को सताने का दुःख,
क्या होता है बच्चों को भूखा सुलाने का दुःख।
मैंने प्रेम से जिसको पाला पोसा बड़ा किया
बुढ़ापे में उसी को अकेला छोड़ जाने का दुःख।
दुखा कर सभी दिलों को जो यूं मुस्कुरा रहे हो,
दुखेगा दिल तो समझोगे दिल दुखाने का दुःख।
जियो जब तक जहाँ में,
जी भर कर जियो यारो
वरना तो जहान में होता ही है मर जाने का दुःख।

Scanned with OKEN Scanner

पुनर्जन्म

शुभम प्रकाश
बी०एड० प्रथम वर्ष
सत्र–2022–24

इस कहानी के सभी पात्र एवं घटनाएँ काल्पनिक है तथा यह कहानी लेखक की कल्पना शक्ति पर आधारित है।

यह कहानी बिहार राज्य के साइन गाँव में स्थित एक व्यक्ति की है जिनका नाम सचिन है। उनका एक अजीब सा व्यवहार पिछले कई सालों से उनके माता–पिता को परेशान कर रहा था। वह जब भी रात को सोते थे तो अचानक उनकी नींद खुल जाती थी और वह घबरा जाते थे। जब उनके घर वाले उनसे पूछते थे कि तुम्हें क्या हुआ तो कुछ बताते नहीं थे, और डर जाते थे और उनको बहुत तेज बुखार आ जाता था। कई बार तो उनको देखकर ऐसा लगता था जैसे उन्हें कोई और शक्ति काबू कर रही है।

यह बात जब उनके एक शिक्षक को पता चली तो उन्होने अपने एक जान पहचान वाले साधु को लेकर सचिन के गाँव पहुँचे, पहुँचकर साधु ने सचिन से सारी बातें पूछी। शुरू में सचिन काफी घबरा रहा था क्योंकि वह डरा हुआ था लेकिन बहुत कोशिश के बाद वह सारी बात बताने को राजी हुआ।

उसने बताया कि उसके सपने में एक मत्तूर गाँव आता है जो कि कर्नाटक राज्य में स्थित है वहाँ पर एक तालाब है और उस तालाब के अंदर एक ताबूत पड़ी हुई है, यह सुनकर साधु बोला यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। हो सके तुम वहाँ पर गए होगे, कभी या फिर तुम उसके बारे में जानते होगे, तो सचिन बोला कि नहीं मैं कभी नही वहाँ गया हूँ ना कभी उसके बारे में पढ़ा है फिर भी वह गाँव मेरे सपने में क्यूँ आता है, वह तालाब मेरे सपने में क्यों आता है, उस तालाब के अंदर एक ताबूत है वह मेरे सपने में क्यों आता है, मैं इसके बारे में पहले कभी नहीं जाना। साधु सचिन के माता–पिता को एक सुझाव दिया, उन्होंने बोला कि क्यों ना आप वाकई में उस जगह पर जाएँ। यह सुनकर सचिन के माता–पिता ने सोचा कि एक बार चल के देख लिया जाए कि क्या वाकई में जो सचिन के सपने में आ रहा है उसमे कितनी सच्चाई है। उन्होंने अपने साथ सचिन को भी ले लिया और सचिन के शिक्षक को भी ले लिया। वह कर्नाटक राज्य के मत्तुर गांव की तरफ निकले जैसे ही वह कर्नाटक राज्य में प्रवेश करते हैं कि सचिन बोला कि यह सारे रास्ते मुझे पता है। यह सारी जगह मुझे पता है, मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं कभी ना कभी यहाँ पर आया हूँ यह सब सुनकर सचिन के माता–पिता बहुत हैरान थे सचिन बोलता है कि आगे का रास्ता मैं बताऊंगा, उस तालाब के पास कैसे जाना है यह मुझे पता है। और आगे का रास्ता वही बताता है और वह ठीक मत्तूर गाँव के तालाब के पास पहुँच जाता है। यह सब देखकर सचिन के माता–पिता की आँखें फटी की फटी रह जाती है। वह काफी घबरा जाते हैं कि आखिर में हो क्या रहा है। वहाँ पर पहुँचते ही सचिन बोलता है कि आप इस तालाब के अंदर से उस ताबूत को निकाले, तो सचिन के पापा एक मछुआरे को पकड़ते हैं, मछुआरा उस तालाब के अंदर जाता है और सही में उस तालाब के अंदर से ताबूत निकलता है। यह देखकर सभी लोग दंग रह जाते हैं, सभी लोग जैसे ही सचिन की तरफ देखते हैं कि सचिन वहां से गायब रहता है। सभी लोग सचिन को काफी ढूंढते हैं, बहुत ढूंढने के बाद जब सचिन नहीं मिलता है तो वह इस बात की खबर स्थानीय पुलिस को देते हैं और कुछ समय वहीं पर बिताते हैं फिर एक दिन अचानक सचिन के पापा को सपना आता है जिसमें एक लड़का जिसका सर दिख नहीं रहा था। वह बोलता है कि आपने उस ताबूत को निकाला तो, मगर खोला नहीं, यह स्वप्न देखने के बाद सचिन के पापा बहुत हैरान हुए उन्होंने इस बात की खबर सभी को दी और अगले सुबह वह ताबूत को खोलने तालाब के पास गए। जैसी ही वह ताबूत को खोलते हैं तो उसमें उनके बेटे सचिन का मृत शरीर मिलता है जो कि एक बहुत ही पुराना वस्त्र पहने हुए था। इस बात की खबर सचिन के पापा ने स्थानीय पुलिस को दी। फिर उस मृत शरीर का पोस्टमार्टम हुआ तो पता चला कि यह तो आज से 22 साल पहले की लाश है और हैरानी की बात यह थी कि सचिन का भी जन्म 22 साल पहले ही हुआ था। सभी लोग काफी हैरान थे, वे लोग उस शरीर का अंतिम संस्कार करते हैं और काफी दु:ख के साथ वे लोग अपने घर निकलते हैं, ठीक 2 दिन के सफर के बाद घर पहुँचते हैं जैसे ही पहुँचते हैं तो देखते हैं कि सचिन वहीं बेड पर सोया हुआ था। यह देखकर सभी लोग डर जाते हैं। वे लोग सचिन को उठाते हैं, सचिन उठता है और रोते हुए बोलता है कि आप लोग कहाँ चले गए थे। मैं पिछले कई दिनों से

Scanned with OKEN Scanner

यहाँ अकेले हूँ, खाना भी नहीं खाया। सचिन के पापा सचिन को सारी घटना के बारे में बताते हैं फिर सचिन बोलता है कि ऐसा तो कभी नही हुआ, मैंने कभी सपना नही देखा, मैं क्यूँ झूठ बोलूँ। यह सब बातें सचिन के पापा और उनके परिवार को हजम नहीं हो रही थी उन्होंने हिमालय पर्वत से एक साधु को बुलाया जो कि बहुत ही पुराने साधु थे उन्होंने बहुत सी ऐसी घटनाओं को अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने बताया कि यह पुनर्जन्म की घटना है दरअसल ठीक 22 साल पहले सचिन की पिछले जन्म में हत्या कर दी गई थी और इनकी लाश को उस तालाब में फेंक दिया गया था। जिसकी वजह से इनकी आत्मा को पिछले जन्म में शांति नही मिली। इसीलिए इनके पिछले जन्म की आत्मा इनके सपने में आती थी और इन पर काबू कर लेती थी। लेकिन जब आपने उस ताबूत से उसका मृत शरीर निकालकर उसका अंतिम संस्कार किया तब उसकी आत्मा आजाद हो गई और आपके बेटे को भी उस चीज से छुटकारा मिल गया।

उसके बाद सचिन अपने जिले के ही एक कॉलेज से बी. एड. करना चालू कर दिया और आज वह एक बहुत अच्छा शिक्षक है।

Scanned with OKEN Scanner

बेटियाँ और उसका मन

रिद्धिमा कुमारी
क्रमांक– 10
बी०एड० प्रथम वर्ष
सत्र – 2022–24

जैसे–जैसे बेटी बड़ी होने लगती है,
उसके सामने मर्यादा की दीवार खड़ी होने लगती है।
अंतर्मन कहता है, तोड़ देनी चाहिए दीवार,
परंतु लड़की होती है समझदार,
वह दीवार पर लगाती है खुटियाँ,
पढ़ाई–लिखाई और रोजगार की।
और एक दिन धीरे से उन पर रखती है पाँव,
लगाकर अपने जीवन का दाव,
और एक दिन पहुँच जाती है दीवार के पार।

Scanned with OKEN Scanner

छठ–पूजा

निहारिका सिंह
क्रमांक– ६०
बी.एड. द्वितीय वर्ष)
सत्र 2020–22

ये एक मात्र शब्द नहीं, ये एक आत्मा से रूह का मिलन है। इस पर्व का पूर्वांचल में, दीपावाली और होली से भी ज्यादा चलन है। भले हम साल भर रहें कहीं दुनियां के किसी भी कोने में, छठ में घर जाने का एक अलग उल्लास हैं। छठ पूजा मनाया जाने वाला एकमात्र प्राचीन वैदिक त्योहार है। प्रकृति और सूर्य को उसकी योगदान के लिए करता ये नमस्कार है। हर जाति, धर्म और वर्ग के सब लोग मिल इसे मनाते है बड़े धूमधाम से, हर रस्मों–रिवाजों को इसके, वैज्ञानिक तौर से किया गया स्वीकार है। चार दिवस के इस उत्सव का लोगों में एक अलग ही होता उमंग है। हर रस्मों को सब साथ मिल कर करते है, इसका उद्देश्य ही रहना संग है। छठी मईया – की महिमा इतनी अपार है, कि हर भक्त की इच्छा होती है पूरी, भले कोई गरीब हो लाचार हो या कोई किसी भयंकर बीमारी से तंग है। घर और घाट को अच्छे से साफ कर, दुल्हन की तरह सजाया जाता है। पहले दिन के नहा खा के बाद, दूसरे दिन खरना मनाया जाता है।

व्रती 36 घंटे निर्जला उपवास रख के भक्ति में डूब जाते हैं। शुद्ध पकवान पका, सूर्य को अर्घ्य दे, छठी मईया को चढ़ाया जाता है। सभी व्रती और इस त्योंहार में मान्यता रखने वाले को छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनाएँ।

Scanned with OKEN Scanner

जीवन का संघर्ष

कृष्ण कांत पल्लव
क्रमांक– 47
बी.एड. प्रथम वर्ष

हताश तू, निराश तू, बैठे–बैठे क्यों कर रहा, खुद का विनाश तू।
बुद्धि का प्रबल ज्ञानवान तू , फिर क्यों खो रहा आत्म–सम्मान तू।

नयन में आँसू क्यों तेरे , आँखों को क्यों तू मिचता है।
देख तो जरा किसानों को, कभी मंडी से तो कभी मौसम की मार से वह भीगता है।
ठहरता नहीं वह फिर भी, हर बार खेतों को सींचता है।

नहीं अकेला तू, तेरे साथ तेरी परछाई है।
फिर क्या हुआ, अपनों ने अपनापन छोड़कर निभाई है।
रख हौसला तू अपने कर्मों पर, ऊपर वाला थोड़ी ना कसाई है।
रहेगा वह साथ तेरे, जब तक तेरी लड़ाई है।

हो सकता है एक बार, उसने अनसुनी कर दी तेरी विनती हो।
क्या पता, तेरे सपनों से बड़ी तेरी नियति हो ।

तो चल उठा मसाल और चढ़ जा, संघर्ष का ये पहाड़ विशाल तू ।
पा ले आसमान को अपने हौसलों के उड़ान से, बन जा समाज का एक मिसाल तू ।

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षक का जीवन

सुमन राज
क्रमांक 2
बी०एड०– प्रथम वर्ष
सत्र – 2022–2024

असफलता को सफलता में बदलने वाले, निराशा को आशा में बदलने वाले और अज्ञानी को ज्ञानी में बदलने वाले शिक्षक ही होते हैं। अगर हम जीवन जीने की बात करें तो किसी भी सजीव प्राणी का जीवन आसान व सरल नहीं है, सभी का जीवन संघर्षमय होता है । आज के युग में कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है जो किसी न किसी कारण से परेशान नहीं है, (जैसे कि कोई आर्थिक रूप से तो, कोई मानसिक रूप से तो, कोई शारीरिक रूप से बहुत परेशान है) इसी सब में हमारी चर्चा शिक्षक के जीवन पर विशेष रूप से हैं, शिक्षक हमारे भविष्य के निर्माण रुपी वस्त्र का अपनी कलम और ज्ञान रुपी सुई से सिलाई करते हैं और हमें लक्ष्य तक पहुंचने में हमारी सहायता करते हैं। फिर भी हमारे समाज में शिक्षक बनना आखिरी विकल्प के रूप में चुनते हैं।

शिक्षकों की आवश्यकता हर प्राणी को है ,पर खुद के घर में शिक्षक को कोई नहीं चाहता। वास्तव में शिक्षा देना सबसे बड़ा धर्म का काम है क्योंकि शिक्षा के कारण ही समाज विकसित और संपन्न हो सकता है। मनुष्य को शिक्षक बनकर सभी को ज्ञान बाँटना चाहिए जिससे समाज का कल्याण हो। शिक्षक समाज को एक नई दिशा देता है। जिस प्रकार कुम्हार अपने मिट्टी को वस्तु का आकार देता है ,ठीक उसी प्रकार शिक्षक भी अपने शिष्यों के जीवन को आकार देता है। हमारे देश के एक महान शिक्षक थे जिन्हें अपना पेट पालने के लिए राधाकृष्णन को मेडल बेचने पड़े थे। वहीं हमारे भारत की पहली महिला शिक्षक जिसने शिक्षा भी बदल दी और समाज भी। सावित्री बाई ने छुआछूत ,सती प्रथा, बाल और विधवा–विवाह निषेध के खिलाफ पति के साथ काम किया। वहीं नेत्रहीन संध्या पांडे जो कि रायगढ़ के सभी भक्तों की टीचर हैं जिनका खुद का जीवन अंधकार से भरा हुआ है, पर वह अपने शिष्यों के भविष्य के जीवन में ज्ञान रूपी रोशनी फैला रही हैं। शिक्षा की भाषा में इतनी क्षमता होती है कि किसी शिष्य को सकारात्मकता से नकारात्मकता और नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर ले जा सकता है। शिक्षा का कर्तव्य है , शिक्षा का मकसद है एक खाली दिमाग को परिवर्तित करना। बच्चों को शिक्षित किया जाना चाहिए पर उन्हें खुद को शिक्षित करने के लिए भी छोड़ दिया जाना चाहिए। कभी–कभी तो ऐसा देखा गया है कि शिक्षक सभी के घरों को रोशन करता है पर उसके खुद के, धर्म शिकार हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार जैसे चिराग तले अंधेरा। अपने विचारों को रखते हुए बस इतना ही कहना है कि शिक्षक को सम्मान के साथ–साथ आर्थिक रूप से भी मजबूत बनाना चाहिए।

शिक्षा के लिए ज्ञान से,
जब हम बड़े बन जाते हैं।
पैसों की फिर बारिश होती,
सारा सुख हम पाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

इन्तजार

खालदा उज्मा
क्रमांक–09
बी०एड०–प्रथम वर्ष
सत्र–2022–2024

इंतजार मैं रोता रहा रात भर यूं ही।
वह सोता रहा रात भर यूं ही।
हर शाम जिस की आहट का मुंतशिर था मैं।
वहीं सुबह से गायब रहा यूं ही।
आँखे नम थी जिसकी जुदाई में,
वह मुस्कुराता रहा तमाम शाम यूं ही।
क्या करूँ, क्या ना करूँ, था कशमकश में मैं।
दिल पिघलता रहा रात भर यूं ही।
ना आना था, ना आया वह, जालिम मगर।
बदलता रहा करवट रात भर यूं ही।
गुजरते वक्त में भर जाएंगे हर जख्म।
गुजरती गई तमाम उम्र यूं ही।
क्या करूँ, किससे कहूँ दिल की बात।
इस फिक्र में हो गई सहर यूं ही।

Scanned with OKEN Scanner

मिट्टी के बने हमलोग, फिर मिट्टी के हो जायेंगे

अभिषेक कुमार
क्रमांक– 07
सत्र– 2022–24
छात्राध्यापक
बी.एड. प्रथम वर्ष
चंद्रशील कॉलेज ऑफ एजुकेशन

जब किसी को देखेंगे भूखे
दे रोटी उसकी भूख मिटायेंगे,
लगा कर उसे अपने गले,
उसका दर्द मिटायेंगे।
मिट्टी के बने है हमलोग
फिर मिट्टी के हो जायेंगे।
जब देखेंगे कुटिया मे अंधेरा
जला कर द्वीप अंधेरा भगायेंगे,
सुखों में शामिल होकर सबके
दुःखों को हर ले जायेंगे।
मिटाकर हर दुश्मनी
दोस्ती को अपनायेंगे,
अपने को इस लायक बनायेंगे
कि सबके काम आयेंगे।
जीवन का एक लक्ष्य बनाकर
एक दिन जीवन मे सफलता पायेंगे,
मिट्टी के बने है हमलोग
फिर मिट्टी के हो जायेंगे।

Scanned with OKEN Scanner

माँ

कंचन कुमारी
क्रमांक–27
सत्र–2022–2024
बी०एड०–प्रथम वर्ष

मेरी माँ प्यारी माँ,
दुनियाँ में निराली माँ।
मुझको भाती उसकी सूरत,
वो तो है ममता की मूरत ।
सुबह – सुबह वो जल्दी जागती,
दिन–भर कामों के पीछे भागती।
दुनियाँ का पहला प्रेम है माँ,
सबसे कीमती वरदान है माँ ।
मेरी माँ प्यारी माँ,
दुनियाँ में निराली माँ।

Scanned with OKEN Scanner

जिन्दगी का रहस्य

Kumari Neha Bharti
Chandrasheel College of Education
Kanti, Muzaffarpur
D.El.Ed (2022-2024)
Roll No. - 33

फरेब है ये जिन्दगी....
पर्दे के पीछे पर्दा है...
मुश्किल है किसी को पहचानना।
उम्र भर हम...
खुद को भी नहीं जान पाते...
बदलते है अपने कपड़े, मुखौटें और आदतें।
फिर भी कभी इश्क में...
कभी गम में, कभी खुशी में..
कभी विश्वास में...
वादा करते हैं।
जन्मों तक...
ना बदलने का...
एक दूसरे के दिलासे के लिए...
पर्दे के पीछे पर्दा...

Scanned with OKEN Scanner

लक्ष्य

Firoz Ansari
Chandrasheel College of Education
Kanti, Muzaffarpur
D.El.Ed (2022-2024)
Roll No. - 38

जीवन के कठिन लम्हों में,
समस्याओं का निवारण है लक्ष्य।
मायूश, निराश चेहरे पर,
मोहक मंदहास्य है लक्ष्य।
बेरंग–सी जिन्दगानी में,
उमंगो की सौगात है लक्ष्य।
मुसाफिर के हर कदमों पर,
साहस रुपी जज्बात है लक्ष्य।
नाउम्मीदी के काले बादलो में,
एक हसीन ख्वाब है लक्ष्य।
अफसोस के गहरे समंदर में,
उम्मीदों का तालाब है लक्ष्य।
प्रतिकूल परिस्थितियों में,
प्रोत्साहन का सरताज है लक्ष्य।
विद्वानो की पारखी दृष्टि में,

Scanned with OKEN Scanner

जीवन मे कुछ करना हैं तो मन को मारे मत बैठो

By Alok Kumar,
Lecturer Chandrasheel college of Education,
Kanti, Muzaffarpur

जीवन में कुछ करना है तो मन को मारे मत बैठो,
आगे–आगे चलना है तो हिम्मत हारे मत बैठो।
चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है,
ठहरा पानी सड़ने लगता,बहता निर्मल होता है।
पाँव मिले चलने के खातिर, पाँव पसारे मत बैठो,
आगे–आगे चलना है तो हिम्मत हारे मत बैठो,
मन को मारे मत बैठो।
तेज दौड़ने वाला खरहा, दो पल चल कर हार गया,
धीरे–धीरे चल कर कछुआ, देखो बाजी मार गया।
चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठो,
आगे–आगे चलना है तो हिम्मत हारे मत बैठो,
मन को मारे मत बैठो।
धरती चलती तारे चलते चाँद रात भर चलता है,
किरणों का उपहार बाँटने सूरज रोज निकलता है।
हवा चले तो महक बिखेरे, तुम भी प्यारे मत बैठो।
आगे–आगे चलना है तो हिम्मत हारे मत बैठो,
मन को मारे मत बैठो।

Scanned with OKEN Scanner

KitaabShoppe.in

WE DEALS IN:

Stationery | Note-Books | Uniform | School Books

UPTO 5% OFF ON NCERT BOOKS & UPTO 20% ON ALL PRODUCTS

https://www.kitaabshoppe.in/

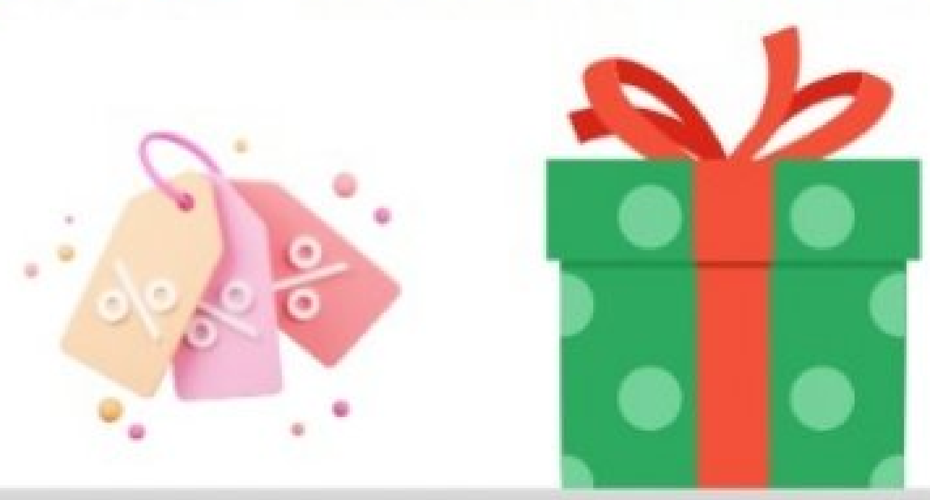

DOWNLOAD APP

App Store

customersupport@kitaabshoppe.in

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

CHANDRASHEEL™ COLLEGE OF EDUCATION

LEARN.EXCEL.SERVE

(Under the aegis of CHANDRASHEEL EDUCATIONAL TRUST FOUNDATION, Kanti, Muzaffarpur)

Kanti Kasba, Kanti, Muzaffarpur, Bihar -843109
Contact - 8083981648

Scanned with OKEN Scanner